ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०८० अप्रैल २०२३

₹ ३०

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

(विषय – महिला क्रांतिकारी के प्रसंग)

				पुरस्कार निधि
प्रथम	–	सौ. पद्मा चौगांवकर	गंजबासोदा (म. प्र.)	१५००/–
द्वितीय	–	डॉ. लता अग्रवाल	भोपाल (म. प्र.)	१२००/–
तृतीय	–	श्री निलय भारद्वाज	देवधर (झारखंड)	१०००/–
प्रोत्साहन	–	श्री गोविन्द भारद्वाज	अजमेर (राजस्थान)	५००/–
एवं	–	श्री सन्तोष कुमार सिंह	मथुरा (उ. प्र.)	५००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

विषय– हिन्दी बाल कहानी की पुस्तक

विजेत्री	–	डॉ. शील कौशिक, पुरस्कृत कृति –	सिरसा (हरियाणा) माशी की जीत	५०००/–

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२

विजेता	–	श्री संतोष कुमार सिंह, पुरस्कृत कृति –	मथुरा (उ. प्र.) बाल सजल सुगंधा	२१००/–

समाचार

देवपुत्र के मानद संपादक महाराष्ट्र भारती से सम्मानित

गत माह विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी में हिन्दी का ध्वज फहराकर यशस्वी हुए देवपुत्र के मानद संपादक और मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे अकादमिक जगत के अत्यन्त प्रतिष्ठित महाराष्ट्र साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'महाराष्ट्र भारती' के लिए चुने गए हैं। सम्मान निधि के रूप में इस सम्मान में एक लाख रुपए प्रदान किए जाते हैं। डॉ. विकास दवे को देवपुत्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

चैत्र	२०८०	▪	वर्ष	४३
अप्रैल	२०२३	▪	अंक	१०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

कहा जाता है कि ईश्वर ने मानव को अन्य प्राणियों की अपेक्षा जो विशेष वरदान दिए हैं उनमें एक है हँसी। 'हास्य' साहित्य के नवरसों में एक प्रधान रस है जो प्राय: बच्चों-बड़ों सबको समान रूप से प्रिय होता है।

कहते हैं बड़ी से बड़ी कठिनाई का भी यदि मुस्कुराते हुए सामना किया तो वह आसान लगने लगती है। श्री गणेश जी की वंदना के एक श्लोक का अंश हैं- **'प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशांतये'**

प्रसन्नवदन (हँसमुख) स्वरूप का ध्यान सारे विघ्न-बाधाओं को शांत कर देता है। प्राचीन काल में राजाओं के निजी साथियों में एक विदूषक का काम होता था राजा कहीं भूल कर रहा हो तो उसे ध्यान दिलाना। जब मंत्री, सेनापति इत्यादि भी कुछ कहने में संकोच करते तब विदूषक बिना डरे हँसते-हँसते, व्यंग्य विनोद करते वह बात कह जाता था।

वैसे हास्य विनोद का उपयोग करना बड़ी समझदारी का काम है अन्यथा एक हँसी बड़ा अनर्थ भी करवा सकती है। महाभारत युद्ध का एक कारण द्रोपदी की अनुचित हँसी बना। कहते हैं न वे दुर्योधन की हँसी उड़तीं न महाभारत के बीज पड़ते।

आप हँसो और सामने वाला भी उसका आनंद ले, वह भी हँस पड़े तो हास्य वरदान है और नहीं तो अभिशाप। हास्य अकेला हानि नहीं करता पर उसका साथी यानि व्यंग्य उसे पैना बना देता है इसलिए हास्य जब व्यंग्य के साथ हो तो उसका प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से, उचित परिस्थिति में ही करना चाहिए।

हँसी प्राय: गंभीर लोगों को नहीं सुहाती पर हास्य पैदा करना या चुटकुला बनाना भी कोई आसान काम नहीं होता। चुटकुला एक प्रकार से हास्य रस की लघुकथा ही है। जो किसी घटना या दृश्य को सामान्य से अलग दृष्टि से देख पाता है, 'आउट ऑफ बॉक्स' सोच पाता है, वही तो चुटकुला बना पाता है। अत: 'मूर्खतापूर्ण बात' लगते हुए भी यह बुद्धिमत्ता की ही कोख से जन्म लेता है।

हँसते-रहिए मुस्कुराते रहिए आनंद परमात्मा का रूप है और हँसना आनंद के मार्ग का निकटतम पड़ाव है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- अप्रैल फूल बनाया -डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ०८
- गधा जो राजा न बस सका -शैलेन्द्र सरस्वती ३७
- नियमित अभ्यास -नीना सिंह सोलंकी ४४
- समस्या समीकरण -शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी ४८

लोक कथा

- गाने वाला चूहा -सुधा दुबे २४

छोटी कहानी

- मेरा उड़न खटोला -प्राजक्ता देशपांडे ०५
- छोटी कहानी -ज्योत्सना सिंह ०७
- नीलू परी और कबूतर -डॉ. मंजरी शुक्ला १७
- घड़ी -राजेश पाठक २०
- अपनी-अपनी प्रतिभा -यशपाल शर्मा ३५
- सोना समझ गई -प्रिया देवांगन 'प्रियू' ४७

एकांकी

- सोई हुई हँसी -समीर गांगुली २८

लघु आलेख

- कहानी जूते की -हरीशचंद्र पांडे २१

बौद्धिक क्रीडा

- बूझो तो जाने -डॉ. राकेश चक्र ०६
- बिन्दु मिलाकर रंग भरो -राजेश गुजर १८
- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २७

कविता

- फुलवारी -डॉ. सत्यदेव आजाद ३६
- जग-हँसाई -राजेश अरोड़ा ४३
- डॉक्टर चूहा -नीता अवस्थी ४६

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १०
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी १३
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १४
- शिशु गीत -कृष्ण शलभ १६
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी १९
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २२
- थोड़ी-थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भंडारी २६
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ३२
- आपकी पाती - ३२
- हमारी राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ३४
- छः अँगुल मुस्कान - ३४
- पुस्तक परिचय - ४०
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

संवाद

- चमगादड़ है दोस्त -मुग्धा पांडे ४२

बाल प्रस्तुति

- मेरा विद्यालय मेरी दीदी -आयुष्यमान सिंह ३१

प्रसंग

- मैं मूर्ख कैसे ? - ३९

चित्रकथा

- भगवान का शुक्र -देवांशु वत्स ३३
- खाना -संकेत गोस्वामी ४१
- फँस गए -देवांशु वत्स ५०

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

मेरा उड़न खटोला

– प्राजक्ता देशपांडे

''वाह नानी! इस मिठाई को देखकर ही मुँह में पानी आ गया।'' विनय विडियो कॉल पर पास के शहर में बसी नानी से बात कर रहा था।

''हाँ बाबू! तुझे बहुत पसंद हैं ना ये मिठाई, काश की, मेरे पास एक उड़न खटोला होता जिसमें इसे भिजवा पाती।'' नानी से उदास होकर कहा।

''उड़न खटोला मतलब?'' विनय की उत्सुकता जागी।

''फिर कभी बताऊँगी, अभी माँ को फोन दे।'' हँसते हुए नानी ने कहा। नौ वर्ष के विनय को अपनी नानी के हाथ के बने सभी व्यंजन बेहद पसंद थे। शाम को वह अपने मित्रों से मिला आज खेलने का मन किसी का भी नहीं था तो सब आपस में बातें करने लगे।

''पता हैं कल मैंने 'ड्रोन' के बारे में इंटरनेट पर पढ़ा और कुछ वीडियोज भी देखे।'' पराग ने कहा।

''हाँ भाई! परसों मैं शादी में गया था। वहाँ ड्रोन वाले कैमरे से फोटोग्राफी हो रही थी।'' विकास बोला।

''मेरे पिताजी के मित्र के यहाँ मैंने इसे देखा भी हैं।'' अब बारी चिंतन की थी।

''लेकिन क्या ये ड्रोन हेलीकाप्टर की तरह होता हैं?'' विनय ने अपनी शंका रखी।

''अरे नहीं, ड्रोन एक ऐसा चालकरहित विमान होता है जिसकी सहायता से आकाश मार्ग द्वारा किसी सामान की डिलीवरी, स्थान की निगरानी और युद्ध में आकाशीय बमबारी जैसे कार्य को पूर्णता दिए जाते हैं। ड्रोन की सहायता से संकट की स्थिति में आवश्यकता वाले लोगों की सहायता भी की जाती है।'' पराग ने समझाया।

''ड्रोन को उड़ने वाला रोबोट भी कहा जाता है जिसका कंट्रोल रिमोट सिस्टम के माध्यम से एक व्यक्ति करता है इसे आसमानी आँख भी कहा जाता है।'' चिंतन ने आगे बताया।

''लेकिन इसके लाभ क्या हैं?'' विनय ने पूछा।

''ड्रोन के द्वारा उन कामों को भी कर सकते हैं जिसे इंसान के करने में उसकी जान को खतरा पैदा हो। खासकर ड्रोन का उपयोग सैन्य शक्तियाँ करती हैं जैसे रूस–युक्रेन युद्ध के दौरान युक्रेन ने ड्रोन हमलों के द्वारा रूस के टैंकों को नष्ट किया।'' पराग बोला।

''वैसे इसका उपयोग कई जगह पर किया जाता जैसे फिल्म की शूटिंग के लिए बड़े पैमाने पर खेती में बीज डालने के लिए, महानगरों के ट्रैफिक पर नजर रखने के लिए, युद्ध के दौरान दुश्मनों पर निगरानी के लिए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी सामान को पहुँचाने के लिए।'' विकास ने ड्रोन के बारे में जानकारी दी।

''लेकिन यह कितनी दूर तक उड़ सकता हैं?'' विनय ने प्रश्न किया।

''यह उनके वजन और आकार पर निर्भर करता हैं।'' चिंतन ने बताया।

बहुत देर तक सभी के बीच इस विषय पर बातें चलती रहीं, बाद में सब अपने घर चले गए।

रात के खाने के बाद सोने से पहले विनय ड्रोन के बारे में इंटरनेट पर पढ़ता रहा।

''माँ! माँ! जल्दी आओ नानी ने आज मिठाई भेजी है साथ में कचोरियाँ भी हैं।'' विनय अपने हाथों को हिलाते हुए कह रहा था।

''अरे! उठो भी क्या सपना देखा? दो दिन के लिए हमें नानी के घर जाना हैं, तुम्हारे विद्यालय की छुट्टी हैं ना?'' विनय को नींद से उठाते हुए माँ कह रही थीं। विनय हड़बड़ाकर जागा, वह नानी के घर जाने की बात सुन बहुत प्रसन्न था उसे उड़न खटोले के सपने के बारे में उन्हें बताना जो था।

– इन्दौर (म. प्र.)

पहेलियाँ

बूझो तो जाने

– डॉ. राकेश चक्र
शिवपुरी, मुरादाबाद (उ. प्र.)

तन पर धारी लगे परी।
अंतिम अक्षर होय हरी।।१।।

हर घर में है बढ़ी पली।
अंतिम अक्षर होय कली।।२।।

हरियाली से धरा सजाते।
बोलो बच्चो! क्या कहलाते।।३।।

साँसों को जो देता बल।
अंतिम अक्षर जिसके पल।।४।।

दही बिलोकर जो है बनती।
जो पीए उसमें बल भरती।।५।।

चौड़ी कम लम्बी होती।
वाहन चलें कभी न सोती।।६।।

धरा, मेढ़ पर जिसका वास।
कोमल, हरियल तन है खास।।७।।

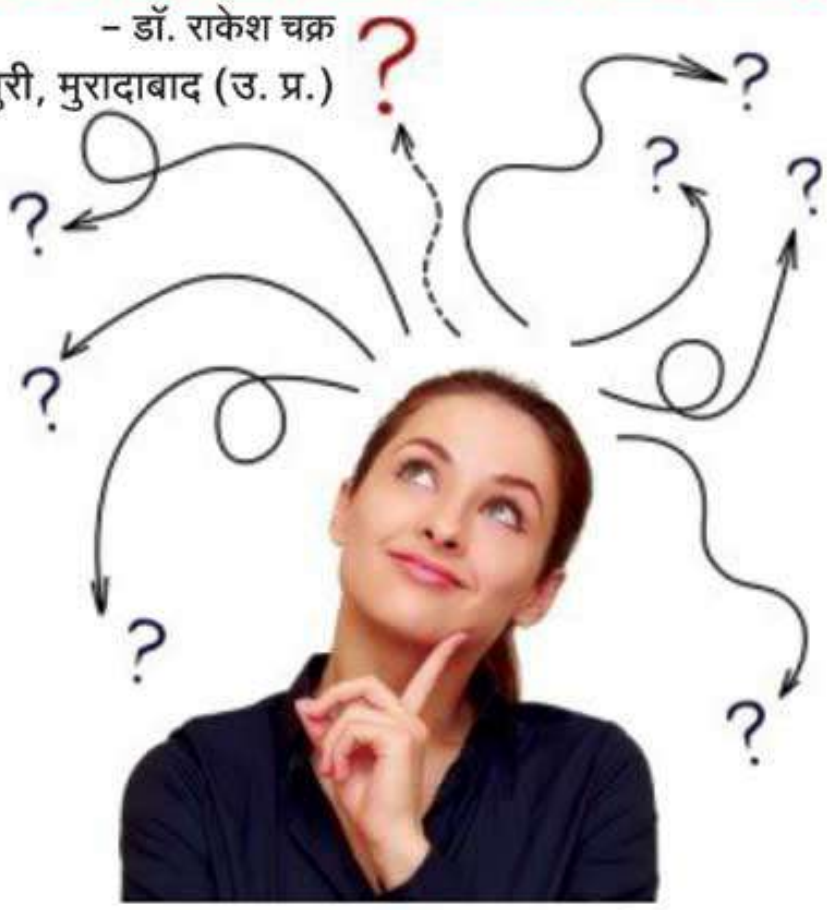

उत्तर – सुपारी, छिपकली, पेड़, पवन, मट्ठा, सड़क, घास।

हरी-भरी

– ज्योत्सना सिंह

केवल उसके बाल ही हरे नहीं थे। उसका तो तन-बदन सब हरा था। बच्चे उसे चिढ़ाते थे कि वह सबसे अलग है। वह अपना दु:ख माँ के पास लेकर आई और सुबक उठी।

माँ तो माँ होती है। उसने उसे हिम्मत दी और कहा– ''मेरी बच्ची! तुम तो सबसे अलग हो। सच तो यह है, कि तुम इस ग्रह की हो ही नहीं। तभी तो कोई तुम्हारी चिंता नहीं करता।''

''माँ! मुझे मेरे ग्रह पर भेज दो।''

''अच्छा!'' कहकर माँ ने उसे उसके ग्रह पर भेज दिया। फिर क्या था। यहाँ पर तो सब रूखा-सूखा हो गया। कहीं कुछ भी सुंदर नहीं लग रहा था। सब सूखा था।

उसने वहाँ से जब यहाँ देखा तब वह दु:खी हो गई। उसने जोर से आवाज लगाई–''माँ!''

और उसकी आँखें खुल गई। अब न तो वह हरी ही थी। न ही वह कहीं गई थी। उसने उठकर बाहर देखा उसका बागीचा हरा-भरा और सुंदर था। उसे वह हरियाली बहुत अच्छी लगी।

अपनी पढ़ाई की मेज पर खुली किताब देखकर वह सब समझ गई कि उसे ऐसा सपना क्यों आया।

आज वह 'सेवअर्थ' वाला पाठ पढ़ रही थी। जहाँ उसने शहर में तेजी से कटते पेड़-पौधों के बारे में पढ़ा था। उसने अपनी छाती पर हाथ रखा और कहा– ''प्यारी! धरती, मैं वचन देती हूँ कि मैं अपने हर जन्मदिन पर एक पौधा लगाऊँगी। साथ ही उसका ध्यान भी रखूँगी। ताकि मेरी धरती हरी-भरी बनी रहे।

– लखनऊ (उ. प्र.)

अप्रैल फूल बनाया

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

जंगल के हर जानवर में कोई न कोई गुण था। कोयल मीठा गाती थी तो मोर का नृत्य मन को लुभाता था। रीछ और भालू लोक संगीत के प्रेमी थे। गर्दभ अपने पक्के राग के लिए दूर–दूर तक प्रसिद्ध था। मैंना बाँसुरी वादन में बेजोड़ थी। बारहसिंगा की ढोलक कर्णप्रिय थी। खरगोश पियानो बजाने में माहिर था। लोमड़ी की अँगुलियाँ हारमोनियम में प्राण फूँक देती थीं। बंदर को भजन गुरु कहते थे। चीता, भैंस, ऊँट, बैल, बकरियाँ, जिराफ और चमगादड़ भी कलाप्रेमी थे।

अप्रैल का महीना आने को था। केवल तीन दिन शेष बचे थे। सियार के दिमाग में एक युक्ति सूझी। उसने पहली अप्रैल को जानवरों को अप्रैल फूल बनाने की योजना तैयार की। अपनी योजना को सफल बनाने के लिए जिगरी दोस्त कछुए से वार्तालाप की तथा मंशा बताई। वह बोला, ''मित्र! पहली अप्रैल को जानवरों को अप्रैल फूल बनाया जाए तो कैसा रहेगा?''

''वाह, बड़ा मजा आएगा फिर तो।'' कछुआ बोला।

फिर क्या था। योजनानुसार कछुए ने घूम–घूम कर जंगल में घोषणा की, ''भाइयो और बहनो! आगामी पहली अप्रैल को जंगल में एक भव्य समारोह होने जा रहा है। इस समारोह में गीत, संगीत एवं नृत्य संबंधी कई प्रतियोगिताएँ भी रखी जाएँगी। प्रतियोगिताओं में प्रथम आने वाले प्रतिभागी पुरस्कार के पात्र होंगे। इसलिए आप सभी से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभागिता करें।''

इतना सुनना था कि जानवरों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। जानवर अपनी–अपनी प्रतिभा को सिद्ध करने के लिए अभ्यास में जुट जाए। लोमड़ी ने अपना हारमोनियम निकाला। खरगोश पियानो के साथ अभ्यास में व्यस्त दिखा। मैना बाँसुरी पर नयी–नयी धुनें निकालने लगी। खरगोश पियानो बजाने में मस्त था। बंदर अपनी टोली के साथ भजन गा रहा था। बारहसिंगा ढोलक पर थापें देता हुआ दिखाई दिया। लगातार तीन दिनों तक सारे जानवर समर्पण भाव से तैयारियाँ कर रहे थे। होड़ जो लगी थी पुरस्कार पाने की जानवरों में।

कोयल को पूरा विश्वास था कि गायन प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार तो उसे ही मिलेगा। मोर यह सोचकर आश्वस्त था कि नृत्य में उसका कोई सानी नहीं। सो, नृत्य प्रतियोगिता का पुरस्कार तो उसके हिस्से में ही आएगा। मैना को अपनी बांसुरी, बारहसिंगा को ढोलक तथा बंदर को भजन–

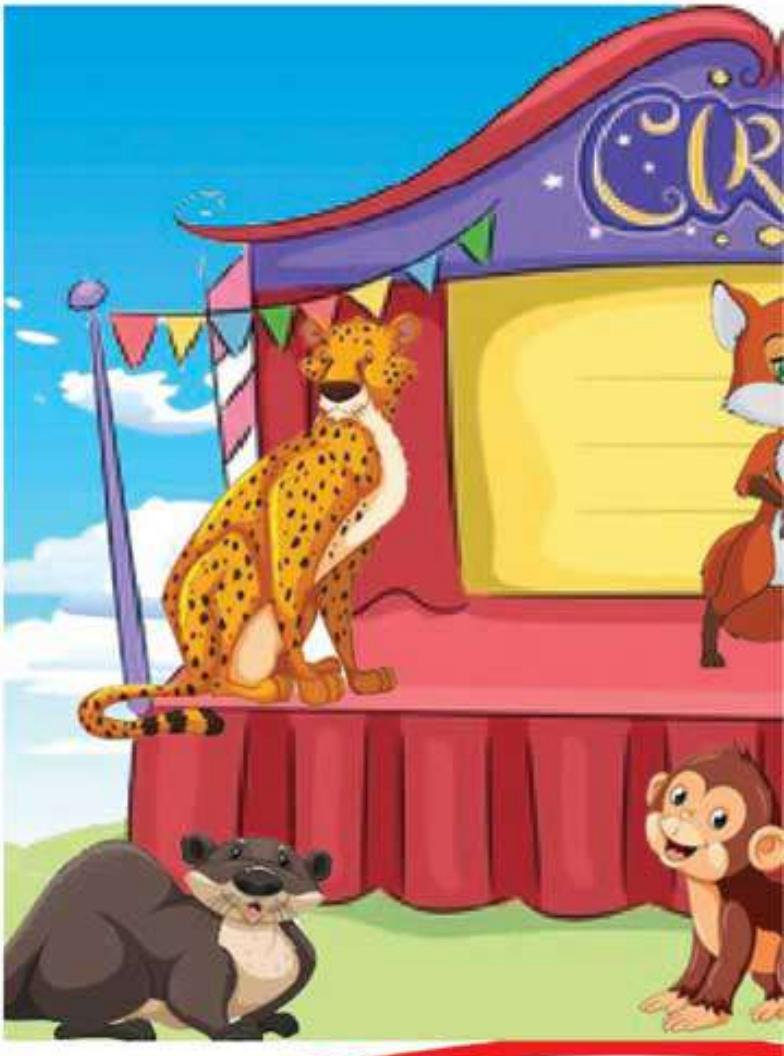

गायन पर पूरा भरोसा था। आँखों में रंगीन सपने पल रहे थे।

पहली अप्रैल का दिन था। समारोह स्थल पर बड़ा–सा मंच बनाया गया। परदे लगाए गए और सामने की ओर कुर्सियाँ रखी गयीं। मंच पर माइक भी रखा था। दस बजे का समय दिया गया था। निश्चित समय पर जंगल के जानवर आ पहुँचे। जानवर यह देखकर चकित हुए कि वहाँ तो कोई न था। बंदर बोल पड़ा, ''कहीं अन्य स्थान पर तो नहीं है समारोह?'' ''ऐसा ही लगता है।'' गर्दभ ने कहा।

तभी मंच पर परदा उठा। लिखा हुआ था– ''अप्रैल फूल'' जानवरों की समझ में सारी बात आ गई। एक–दूसरे से कह रहे थे, ''सियार ने हमें अप्रैल फूल बना दिया।''

जानवरों के मुँह लटक गए। वापस लौटने वाले थे कि सियार तेजी के साथ मंच पर आया, जो परदे के पीछे छिपा हुआ था। उसने घोषणा की, ''बुरा न मानो, आज पहली अप्रैल है। अब अप्रैल फूल तो बन ही गए हैं आप, चलिए रंगारंग कार्यक्रम का आनंद तो उठा लें।''

सियार का सुझाव जानवरों को पसंद आया। बारी–बारी से जानवर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने लगे। गीत, संगीत, नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने जंगल का वातावरण आनंदमय बना दिया था। गर्दभ को ''मूर्खाधिराज'' की सम्मानोपाधि भी प्रदान की गयी।

अंत में मुख्य अतिथि राजा शेरसिंह ने अपने संबोधन में कहा– ''मित्रो! हर वर्ष पहली अप्रैल को 'मूर्ख दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इसे दुनिया के सभी देश हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। मूर्ख दिवस के मनाने की शुरुआत फ्रांस में वर्ष १५८२ में की गई थी। कुछ लोग इसकी शुरुआत वर्ष १३९२ से मानते हैं। जो भी हो, यह मनाया अवश्य जाता है हर वर्ष।

तालियाँ बज उठीं। जानवर मूर्ख बनकर भी प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

मूर्ख के पाँच लक्षण

मूर्खस्य पञ्चचिह्नानि गर्वो दुर्वचनं तथा।
क्रोधश्च दृढ़वादश्च परवाक्येष्वनादरः।।

मूर्ख के पाँच लक्षण हैं अभिमान, अपशब्द (गाली) देना, क्रोध करना, अपनी ही बात पर अड़े रहना (अड़ियलपना) और दूसरों की बात सुनना भी नहीं।

सफल लेखक, कुशल संपादक : श्रीनाथ सिंह

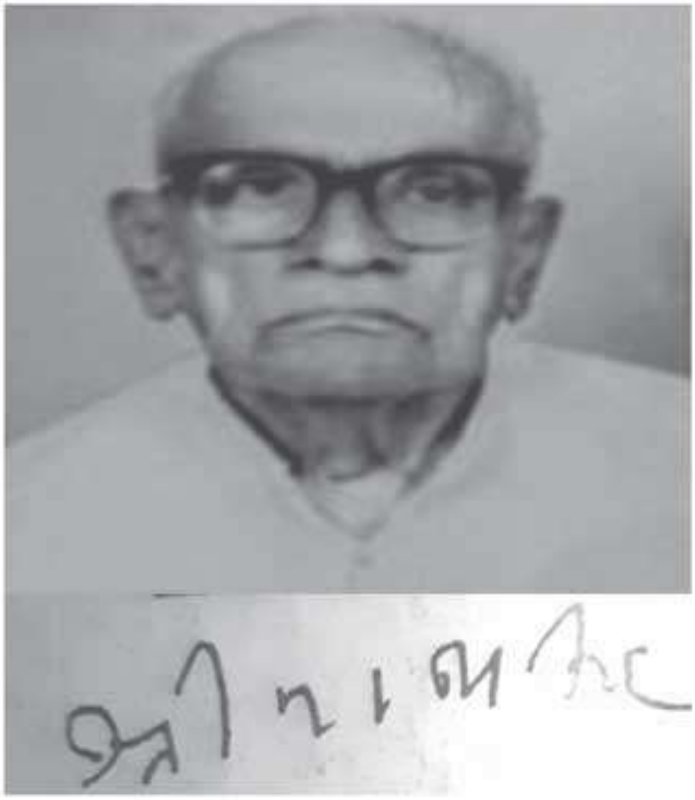

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

प्यारे बच्चो!

बाल साहित्य के पुराने लेखकों में श्रीनाथ सिंह (१ अक्टूबर १९०१–२५ मई १९९६) का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। वे सफल लेखक ही नहीं, कुशल संपादक भी थे। उन्होंने जहाँ **सरस्वती** जैसी अग्रगण्य पत्रिका का संपादन किया, वहीं बच्चों के लिए **शिशु, बालसखा, बालबोध,** महिलाओं के लिए **दीदी** और किसानों के लिए **हल** जैसी पत्रिकाएँ भी सम्पादित कीं।

उनका जन्म प्रयागराज जिले के मानपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता कामतासिंह कृषक थे। वे जब १४ वर्ष के थे तभी **सती पद्मिनी** नाम से उनका काव्य प्रकाशित हो गया था। श्रीनाथ जी ने आजादी की लड़ाई में भी भाग लिया। बड़ों के साथ–साथ बच्चों के लिए उन्होंने कहानी, कविता और नाटक विधा में देश की तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप लेखन किया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वे श्रीश, खरमस्त, लालसखा, बालकवि, कुसुम कुमारी, कलि, लक्ष्मीकांत श्रीपत, जयदेवी, श्यामाबाई आदि अनेक कल्पित और छद्म नामों से भी रचनाएँ लिखते थे। ऐसा इसलिए कि उन्हें अपने संपादन में पत्रिका की आवश्यकता के अनुसार विविध विषयक सामग्री तैयार करनी पड़ती थी। इन नामों से लिखी उनकी रचनाएँ इतना लोकप्रिय हुईं कि लोग संपादक को चिट्ठियाँ भेजकर इन लेखकों से मिलने के लिए पता पूछते थे। फिर जिसे भी सच का पता चलता, वह दाँतों तले अँगुली दबाता।

१९२५ में शिशु कार्यालय, प्रयागराज से प्रकाशित उनकी पुस्तक **बाल कवितावली** में ११० बाल कविताएँ संकलित हैं। जो यह कहते हैं कि पहले बाल साहित्य में बड़े संग्रह नहीं छपते थे, उन्हें अपनी अतीत की ओर अवश्य झाँकना चाहिए। बाल साहित्य की उनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं– **गुब्बारा** (१९२८), **दोनों भाई** (१९३२), **पिपिहरी** (१९३४), **पृथ्वी की कहानी** (१९३४), **बाल भारती** (१९४०), **अविष्कारों की कथाएँ** (१९४०), **मजेदार विज्ञान की कथाएँ** (१९४४), **खेलघर** (१९५८), **गरुड़ कथा** (१९५८), **गांधीजी** (१९५८), **श्री गणेश और अन्य कथाएँ** (१९५८), **मीठी तानें** (१९६२), **सुनहरी नदी का देवता, परी देश की सैर** आदि–इत्यादि।

श्रीनाथ सिंह की बाल कविताएँ बालकों के सरल मन की निश्छल अभिव्यक्ति हैं। आइए, उनकी कुछ प्रतिनिधि रचनाओं का रसास्वादन करते हैं–

पहेली

दस करती हैं दिन भर काम,
दस का यों ही होता नाम।
बीसों रहती सब के साथ,
देखो धर पैरों पर हाथ। (अँगुलियाँ)

नानी का सन्दूक

नानी का सन्दूक निराला,
हुआ धुएँ से बेहद काला।
पीछे से वह खुल जाता है,
आगे लटका रहता ताला।
चन्दन चौकी देखी उसमें,
बेसन लौकी देखी उसमें।
बाली जौ की देखी उसमें,
खाली जगहों में है ताला,
नानी का सन्दूक निराला।
शीशी में गंगा जल उसमें,
चींटी झींगुर खटमल उसमें।
ताम्र पत्र तुलसी दल उसमें,
जगन्नाथ का भात उबाला।
नानी का सन्दूक निराला।
मिलता उसमें कागज कोरा,
मिलती उसमें सूई व डोरा।
मिलता उसमें सीप कटोरा,
मिलती उसमें कौड़ी माला।
नानी का सन्दूक निराला।
जब लड़कों को खाँसी आती,
आती उसमें निकल दवाई।
कभी ढूँढ़ने से मिल जाता,
पेड़ा, बर्फी, गट्टा लाई।
जो कुछ खाकर मरना चाहे,
ढूँढे उसमें जहर, धतूरा।
डर है चोर न उसे चुरा लें,
समझो उसे म्यूजियम पूरा।
उसको छोड़ न लेगी नानी,
दिल्ली का सिंहासन आला।
नानी का सन्दूक निराला।

एक सवाल

आओ, पूछें एक सवाल।
मेरे सिर में कितने बाल ?
कितने आसमान में तारे ?
बतलाओ या कह दो हारे।।
नदियाँ क्यों बहतीं दिन रात ?
चिड़ियाँ क्या करती हैं बात ?
क्यों कुत्ता बिल्ली पर धावे ?
बिल्ली क्यों चूहे को खावे ?
फूल कहाँ से पाते रंग ?
रहते क्यों न जीव सब संग ?
बादल क्यों बरसाते पानी ?
लड़के क्यों करते शैतानी ?
नानी की क्यों सिकुड़ी खाल ?
अजी न ऐसा करो सवाल!
यह सब ईश्वर की माया है।
इसको कौन जान पाया है।

क्यों ?

पूछूँ तुमसे एक सवाल,
झटपट उत्तर दो गोपाल।
मुन्ना के क्यों गोरे गाल ?
पहलवान क्यों ठोके ताल ?
भालू के क्यों इतने बाल ?
चले सांप क्यों तिरछी चाल ?
नारंगी क्यों होती लाल ?
घोड़े के क्यों लगती नाल ?
झरना क्यों बहता दिन रात ?
जाड़े में क्यों काँपे गात ?
हफ्ते में क्यों दिन हैं सात ?
बुड्ढों के क्यों टूटे दाँत ?
ढम ढम ढम क्यों बोले ढोल ?
पैसा क्यों होता है गोल ?
मीठा क्यों होता है गन्ना ?
क्यों चम चम चमकीला पन्ना ?
लल्ली खेल रही क्यों गुड़िया ?
बनिया बांध रहा क्यों पुड़िया ?
बालक क्यों डरते सुन हौआ ?
काँव काँव क्यों करता कौआ ?
नानी को क्यों कहते नानी ?
पानी को कहते क्यों पानी ?
हाथी क्यों होता है काला ?
दादी फेर रही क्यों माला ?
पक कर फल क्यों होता पीला ?
आसमान क्यों नीला नीला ?
आँख मूँद क्यों सोते हो तुम ?

नाव

खाट बनी है नाव हमारी,
छड़ी बनी पतवार।
पार जिसे जाना हो आकर,
होवे शीघ्र सवार।
बड़ी है मजेदार नैया।
रही जा नदी पार नैया।
दो दो पैसे देने होंगे
बात कहूँ मैं साफ।
पर जो तुतलाकर बोलेगा,
उसको है सब माफ।
यही है रोजगार भैया।
रही जा नदी पार नैया
दो दो कंकड़ देकर लड़के
बोल उठे तत्काल।
यह लो खेवा, खोलो नैया,
तानो भैया पाल।
खेवैया ने नैया खोला,
कहा सभी ने बम बम भोला।
उस नैया पर चढ़े मुझे हैं
गये बहुत दिन बीत।
पर न खेवैया वाला
अब तक भूला है यह गीत।
बड़ी मजेदार नैया।
रही जा नदी पार नैया।

कल्लू चाचा

कल्लू चाचा चले बाजार,
जेब में पैसे भरे हजार।
मिला राह में उनको भालू,
लगा मांगने रोटी आलू।
कल्लू चाचा गिरे हाट में,
भालू सोने लगा खाट में।
टूटी खाट, गिर पड़ा भालू,
अब न चाहिए रोटी–आलू!

गुड़िया की बीमारी

गुड़िया को है चढ़ा बुखार,
दिया गया गुड्डे को तार।
मुन्ना बनकर चला डॉक्टर,
बोला– ''लूँगा रुपए चार।
मन लटका कर मुन्नी बोली–
''यह गुड़िया गरीब है भोली।
कुछ तो इस पर दया दिखाओ,
कुछ तो अपनी फीस घटाओ।''
चुन्नी बोली–''सुनो डॉक्टर,
एक बात का ध्यान रहे पर।
कड़वी दवा न बिलकुल देना,
चाहे फीस और ले लेना।''

कहो मत, करो

सूरज कहता नहीं किसी से,
मैं प्रकाश फैलाता हूँ।
बादल कहता नहीं किसी से,
मैं पानी बरसाता हूँ।
आँधी कहती नहीं किसी से,
मैं आफत ढा लेती हूँ।
कोयल कहती नहीं किसी से,
मैं अच्छा गा लेती हूँ।
बातों से न, किन्तु कामों से,
होती है सबकी पहचान।
घूरे पर भी नाच दिखा कर,
मोर झटक लेता है मान।

मक्खी की निगाह

कितनी बड़ी दीखती होंगी,
मक्खी को चीजें छोटी।
सागर–सा प्याला भर जल,
पर्वत सी एक कौर रोटी।
खिला फूल गुलगुल गद्दा सा,
काँटा भारी भाला–सा।।
ताला का सूराख उसे,
होगा बैरगिया नाला–सा।
हरे भरे मैदान की तरह,
होगा इक पीपल का पात।
भेड़ों के समूह सा होगा,
बचा खुचा थाली का भात।
ओस बूँद दर्पण–सी होगी,
सरसों होगी बेल समान।
साँस मनुज की आँधी–सी,
करती होगी उसको हैरान।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

गोपाल बन गया मंत्री

– तपेश भौमिक

उन दिनों बंगाल के सारे राजे–महाराजाओं को बंगाल के नवाब को कर देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त नवाब समय–समय पर तरह–तरह के बहाने बनाकर इन राजे–महाराजाओं से जुर्माना भी वसूलते थे। इस बदसलूकी के कारण राजे–महाराजे नवाब से नाराज रहते थे। बावजूद इसके उन शासकों में कोई मित्रता नहीं थी, जिसके कारण नवाब को अपनी मनमानी करने में सुविधा होती थी। चूँकि नवाब की राजधानी मुर्शिदाबाद के पड़ौस में ही कृष्णनगर राज्य था, इसलिए वे हमेशा इस ताक में लगे रहते कि किस बहाने कृष्ण नगर राज्य को हड़प लिया जाए। वे बार–बार अपने वजीर के साथ यह आलोचना करते कि महाराज कृष्णचंद्र को कैसे दोषी करार दिया जाए और राज्य को हड़प लिया जा सके। वे बार–बार अपनी नयी योजना के साथ कृष्णचंद्र के दरबार में आ धमकते और निराश होकर लौट जाते थे। जितनी बार बिना कुछ जुर्माने की वसूली किए लौटते उतनी ही बार उनकी बौखलाहट बढ़ जाती। नवाब के बौखलाहट का आनन्द सबसे अधिक गोपाल को मिलता, क्योंकि वजीर की सारी योजनाओं पर गोपाल पानी फेर देता था। इस बार भी नवाब अपने वजीर के साथ आ धमके तो महाराज कृष्णचंद्र कुछ सकते में आ गए, क्योंकि कुछ दिन पहले ही उन्होंने सारे करों आदि का निबटारा करते हुए अपनी देनदारी से निवृत्त हो चुके थे।

एक बार ऐसा हुआ कि नवाब साहब बिना कोई अग्रिम सूचना दिए ही थोड़े दिन के अंतराल में अपने कुचक्री वजीर के साथ आ धमके। आते ही नवाब साहब ने महाराज पर यह आरोप लगाया कि वे अपनी प्रजा पर दबाव डालकर कर की वसूली कर रहे हैं, जिसके कारण प्रजा अप्रसन्न है। इस आरोप के लगते ही महाराज ने कहा कि स्वयं चलकर जाँच कर लें कि प्रजा किस हालत में है। इस प्रस्ताव पर वजीर ने सबसे अधिक प्रसन्नता प्रकट की। उसे पता था कि सारी प्रजा कभी भी प्रसन्न नहीं रह सकती। अप्रसन्न लोग मिलेंगे ही एवं नवाब साहब को देखते ही साहस से भरकर अपने दिल की बात उगल देंगे। फिर तो जुर्माना लगाने का अवसर भी हाथ लग जाएगा।

नवाब साहब अपने वजीर और अन्य कुछ दरबारियों को लेकर महाराज कृष्णचंद्र और उनके मंत्री पार्षदों के साथ राज्य का दौरा करने हेतु निकल पड़े। जहाँ–जहाँ से होकर नवाब साहब निकल जाते, वहाँ–वहाँ खेत में काम करते किसान और अन्य ग्रामीण मिल जाते तो उनसे काफी पूछताछ की जाती। इस सिलसिले में किसी ने महाराज की तुलना भगवान से की तो किसी ने कहा कि वे तो उनके लिए पिता समान हैं। नवाब और वजीर को ये बातें कुछ

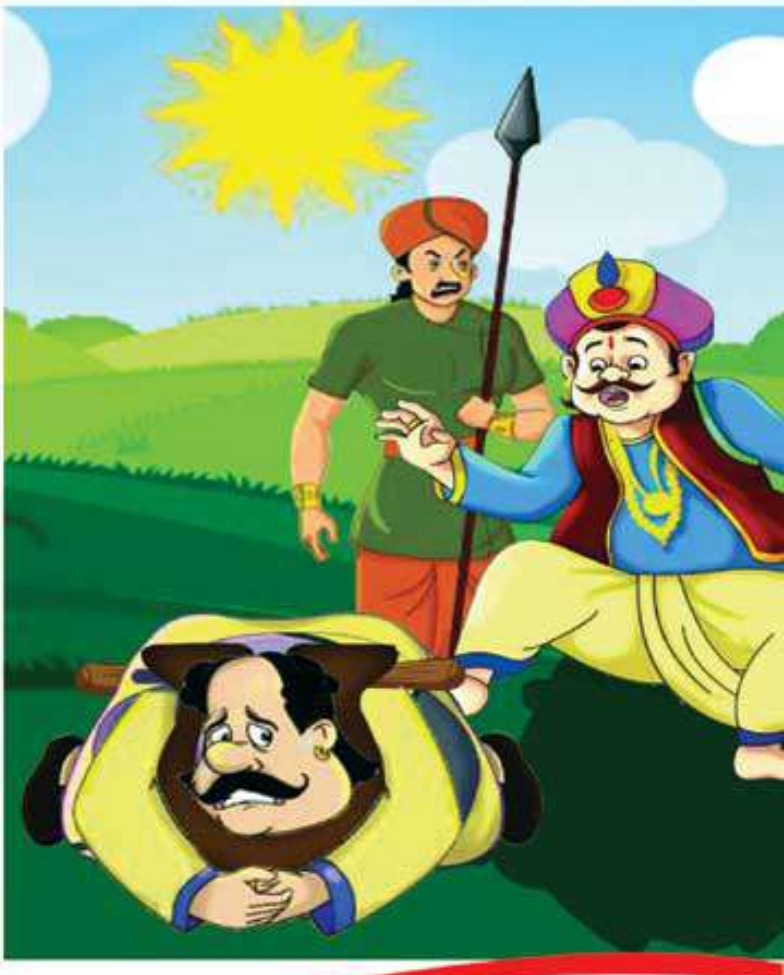

जँची नहीं।

तभी चलते-चलते वे लोग एक जगह पर रुक कर देखने लगे कि आस-पड़ौस में सुस्ताने के लिए कहीं कोई बड़ा छायादार पेड़ है या नहीं। वजीर ने देखा कि दुपहरी के धूप में सबकी छाया छोटी पड़ गई है। ऐसे में महाराज कृष्णचंद्र नवाब साहब की छाया पर कदम धरे हुए हैं। इस दृश्य को देखते ही वजीर के दिमाग में अचानक एक बात कौंध गई कि अब महाराज कृष्णचंद्र पर यह आरोप लगाया जा सकता है कि उन्होंने नवाब के सिर की छाया पर पैर रखकर उनका अपमान किया है। जैसी सोच, वैसा काम। उसने तुरंत नवाब को इस बात से अगाह किया कि महाराज ने उनके सिर की छाया पर पैर रखकर उनका घोर अपमान किया है।

ऐसा आरोप लगते ही महाराज कृष्णचंद्र क्रोध से लाल हो गए। वजीर से उनकी कहासुनी होने लगी। सब लोग गोपाल की ओर देखने लगे, क्यों कि समय

आने पर गोपाल अपनी हाजिर जवाबी से विपक्ष की जग हँसाई कराने से बाज नहीं आता था। इस समय वजीर भी गोपाल की ओर खा जाने वाली नजरों से घूर रहा था। लेकिन गोपाल उसकी ओर ऐसे देख रहा था जैसे वह उसका मित्र हो।

महाराज ने अपने पर लगे आरोप को एकदम बचकाना कहते हुए वजीर को अपनी सीमा में रहने को कहा। इस पर नवाब साहब ने भी गुस्से में भरकर अपने वजीर द्वारा लगाए गए आरोप को सही ठहरा दिया। उन्होंने गुस्से से भरकर यह घोषणा कर दी कि आज से तीन दिन बाद ठीक उसी जगह पर महाराज कृष्णचंद्र के घड़ को सर से अलग कर दिया जाएगा। इस बात पर सभासदों में हड़कंप मच गया। महाराज किसी भी तरह नवाब को समझाने में सफल नहीं हो पा रहे थे कि उन्होंने जान बूझकर छाया पर पैर नहीं रखा था। गोपाल इस अवसर पर कुछ भी नहीं कह रहा था जबकि ऐसे गंभीर अवसर पर वह आगे आकर महाराज को परेशानियों से मुक्त कर देता था। गोपाल की चुप्पी की काफी निन्दा होने लगी।

तीसरे दिन ठीक उसी जगह पर सारे सभासद और अन्य लोग मिले। इस बीच महाराज कृष्णचंद्र के मंत्री ने अतिथिशाला में जाकर नवाब बहादुर की जी-हजूरी और चापलूसी करते हुए यह अर्जी दे दी थी कि महाराज कृष्णचंद्र के बाद उसे ही कृष्णनगर का महाराज घोषित किया जाए। साथ ही गोपाल के बारे में भी उल्टी-सीधी बातें करते हुए यह कह आया कि उसे भी कड़ा दण्ड दिया जाए कि कभी भी नवाब साहब को नीचा दिखाने का अवसर ही उसके हाथ न आए। इस बात पर मंत्री का पासा पलट गया। नवाब ने उसे धमकाते हुए कहा कि वे गोपाल को अपने दरबार में एक अच्छा पद देना चाहते हैं। इस पर तुरंत मंत्री गिरगिट-सा रंग बदलते हुए कहा कि हुजूर जैसा कहते हैं, वैसा ही होगा। तब नवाब ने शंका प्रकट की कि गोपाल अब कोई चाल तो नहीं चल रहा है। वह चुप

क्यों है? नवाब गोपाल की हाजिर जवाबी के प्रशंसक थे ही पर सतर्क भी रहते थे कि कहीं उनके द्वारा चलाई गई चाल उल्टी न पड़ जाए। नवाब में क्रूरता थी लेकिन मूर्ख और बुद्धिमान में क्या अंतर है, इसकी समझ उनमें जरूर थी।

इस बीच मंत्री ने गोपाल को गुप्त रूप से यह समझाने की कोशिश की कि अब भी समय है कि वह नवाब साहब की जी हजूरी करे तो वह कहकर मुर्शिदाबाद के दरबार में कोई–सा अच्छा पद दिलवा सकता है। गोपाल ने मंत्री की बातों पर केवल सिर हिलाया और कुछ भी न कहा।

निर्धारित तिथि को महाराज को एक पेड़ के तने के साथ उनके ही मंत्री ने बाँध दिया। गोपाल अब तक चुप ही रहा। नवाब ने घोषणा की कि कोई अगर अपनी पुरानी दुश्मनी के कारण महाराज से बदला लेना चाहता हो तो वह आगे आए और तलवार से उनके सर को काट दे। तभी गोपाल ने आगे आकर कहा कि महाराज से उसकी पुरानी दुश्मनी है और वह उनका सर काटना चाहता है। इस बात के सुनते ही महाराज मूर्च्छा खाकर गिर पड़े और महाराज ने केवल इतना कहा कि मित्रता का यह परिणाम! सारे लोग गोपाल की निन्दा करने लगे। लेकिन गोपाल ने किसी की कोई परवाह नहीं की और तलवार लेकर आगे बढ़ गया। जमीन पर जहाँ महाराज की छाया पड़ी थी, वहीं गर्दन की छाया पर तलवार से वार कर दिया।

इस दृश्य को देखते ही सबकी आँखें खुली की खुली रह गई। वजीर ने आगे कहा कि बात क्या है? इस पर गोपाल ने नवाब बहादुर से कहा कि महाराज! जब आपकी छाया पर महाराज के कदम रखने से आपका अपमान हुआ है तब महाराज की छाया की गर्दन काटकर उन्हें दण्ड भी दिया जा सकता है। अब नवाब साहब की बोलती बंद हो गई और वजीर केवल हकला कर रह गया। नवाब साहब ने तुरंत महाराज को मुक्त करते हुए यह कहा कि जिस राज दरबार में गोपाल जैसा बुद्धिमान व्यक्ति रहेगा, वहाँ कोई आँच नहीं आ सकती। साथ ही नमक हराम मंत्री जिस दरबार में होगा उस राज्य का तो सत्यानाश होकर रहेगा। आपका मंत्री आपके आस्तिन का साँप है। उसने ही सारी चाल चली थी। उसकी गर्दन को ही धड़ से अलग कर दिया जाए। अब मंत्री ने पासा पलटते देखा तो उसने जरा भी देर किए बिना भागने का प्रयत्न किया किन्तु सिपाहियों ने उसे कैद कर लिया। महाराज कृष्णचंद्र जरा भी देर किए बिना मंत्री को कैदखाने में डलवा दिया और गोपाल को अपना मंत्री घोषित कर दिया। सारे लोग गोपाल की जय जयकार करने लगे। वजीर का झेंपू चेहरा देखते ही बन रहा था।

– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

शिशु गीत

हाथी और रिक्शा

– कृष्ण शलभ

अल्लम गल्लम खाकर हाथी
खुश थे किया कमाल।
फूला पेट हुआ गुब्बारा
भूले अपनी चाल।।

खड़े सड़क पर रिक्शे वाले
से कर रहे खुशामद।
दूँगा एक रुपैया, भैया!
पहुँचा दो भोपाल।।

– सहारनपुर (उ. प्र.)

नीलू परी और कबूतर

– डॉ. मंजरी शुक्ला

नीलू परी अपनी खूबसूरत सफेद और नीली फ्रॉक पहने उड़ी जा रही थी। तभी उसे सामने से एक कला कबूतर आता दिखा।

नीलू रुक गई और कबूतर के पास आने पर बोली– ''मैंने पहली बार काला कबूतर देखा है।''

कबूतर नीलू को देखकर खुश होता हुआ बोला– ''अरे वाह! तुम तो परी हो ना... तुम जरा इस बादल से कह दो कि ये बरस जाए।'' नीलू हँसते हुए बोली– ''इतनी ठंडी में तुम भीगना चाहते हो?'' ''हाँ! तभी तो तुम जान पाओगी कि मैं काला कबूतर हूँ भी या नहीं।'' नीलू को कबूतर की बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। वह बुदबुदाई– ''प्यारे बादल! थोड़ा सा इस कबूतर के ऊपर बरस जाओ।''

''क्यों नहीं!'' कहते हुए बादल ने कबूतर के ऊपर ठंडी–ठंडी वर्षा की बूँदें बरसा दीं।

देखते ही देखते कबूतर के ऊपर से काला रंग बहने लगा और कबूतर रुई की तरह सफेद हो गया।

''ये तुम्हें क्या हो गया था?'' नीलू ने आश्चर्य से पूछा। कबूतर बोला– ''मेरे साथ आओ।''

नीलू उसके पीछे–पीछे उड़ चली।

थोड़ी ही दूर जाने पर नीलू की आँखें जलने लगी और उसे साँस लेने में परेशानी होने लगी। उसने देखा कि चिमनियों से निकलते काले धुँए से आसमान काला हो रहा था।

कुछ ही देर में उसकी फ्रॉक भी पूरी काली हो गई। उसने बादल को ढूँढा पर वह उसे कहीं नहीं दिखाई दिया। ''बादल कहाँ चला गया?'' परी ने परेशान होते हुए कबूतर से पूछा।

''वह इतनी तेज गर्मी से घबराकर चला गया।'' कबूतर ने अपने काले पंखों को देखते हुए कहा– ''यहाँ एक भी पेड़ नहीं है। सब जंगल काटकर घर और फैक्ट्री बना दी गई है। बादल बरसना चाहे तो भी नहीं बरस सकता है।'' कबूतर दुखी होते हुए बोला। नीलू ने कुछ सोचते हुए कहा– ''पर हम सबको ही तो इस पृथ्वी को बचाना है। हम लोगों को बताएँगे कि बिना पेड़ों के हम नहीं बचेंगे।''

''हाँ, शुद्ध हवा और साफ पानी के बिना सब समाप्त हो जाएगा।'' कबूतर बोला और नीलू के साथ उड़ चला। ''तुम्हारी कहानी बहुत अच्छी है।'' पियूष के शिक्षक ने कहा।

पियूष ने अपनी नोटबुक बंद कर दी और मुस्कुरा दिया। पूरी कक्षा तालियों से गूँज उठी।

शिक्षक ने कहा– ''सभी बच्चों को तुम्हारी तरह पर्यावरण के बारे में सोचना चाहिए और अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।'' ''हाँ, हम सब पेड़ लगाएँगे।'' सभी बच्चों ने एक साथ कहा।

और पियूष सोच रहा था कि कितना अच्छा होगा अगर सब खूब सारे पेड़ लगाएँगे तो वह हरे भरे जंगल, आसमान में उड़ते हुए बादल और उनमें झाँकते सतरंगी इंद्रधनुष पर कहानियाँ लिख सकेगा।

– पानीपत (हरियाणा)

बिन्दु मिलाकर रंग भरो

– राजेश गुजर

कश्यपजी के पुत्रों की कहानी

– मोहनलाल जोशी

प्राचीन काल में एक बहुत बड़े ऋषि थे। उनका नाम कश्यप था। उनके दो पत्नियाँ थीं। पत्नियों का नाम कद्रू और विनता था। कद्रू और विनता दोनों बहिनें थीं।

कश्यपजी ने कद्रू और विनता को अनेक पुत्रों का वरदान दिया। कद्रू ने एक हजार सांपों को जन्म दिया। विनता के गर्भ से दो अंडों ने जन्म लिया।

विनता के अंडे पांच सौ वर्षों तक पड़े रहे। फिर उसने एक अंडा फोड़ दिया। उसमें से एक विशाल पक्षी ने जन्म लिया। उसका नाम अरुण था। वह सूर्य भगवान का सारथी बना। दूसरे अंडे से एक हजार वर्ष बाद गरुड़ ने जन्म लिया। गरुड़ भगवान विष्णु का वाहन बना। गरुड़ और अरुण दोनों भाई थे। गरुड़ बड़ा भाई और अरुण छोटा भाई।

विनता और कद्रू की शर्त

एक बार विनता और कद्रू वन में घूम रहे थे। तभी उन्होंने आकाश में उड़ता हुआ सफेद घोड़ा देखा। उसका नाम उच्चैःश्रवा था। वह बहुत सुन्दर था। कद्रू ने कहा– ''देखो! इसकी पूँछ काले रंग की है।'' विनता ने कहा– ''नहीं इसकी पूँछ सफेद है।'' दोनों में शर्त लग गई। जो शर्त हारेगा वह दासी बनेगा। कद्रू ने अपने हजार सर्प–पुत्रों को कहा– ''तुम बाल जैसे बन कर घोड़े की पूँछ में चिपक जाओ। मुझे शर्त जीतनी है।'' सर्पों ने मना कर दिया। कद्रू ने सर्पों को शाप दिया– ''तुम यज्ञ में भस्म हो जाओगे।''

कुछ सर्पों ने माँ का कहना मान लिया। उन्होंने घोड़े की पूँछ काली कर दी। विनता शर्त हार गई। वह अपनी बहिन कद्रू की दासी बन गई।

– बाड़मेर (राजस्थान)

घड़ी

– राजेश पाठक

दीपू सातवीं कक्षा में था। पढ़ाई में औसत। आलसी भी। वह सुबह–सुबह तैयार हो विद्यालय जाने में प्राय: देर कर देता था। माँ–बाप के झकझोर कर उठाने से भी वह जल्दी नहीं उठता। अलार्म घड़ी भी जैसे ही बजती उसका बटन दबा उसे बंद कर फिर से सो जाया करता। उसके माँ–बाप को दीपू के अधिकांश देर से विद्यालय पहुँचने को लेकर विद्यालय प्रबंधन से हमेशा शिकायतें सुनने को मिलती रहतीं। उसके माँ–बाप इसको लेकर परेशान रहते। इधर जिस भाड़े के मकान में वे लोग वर्षों से रहते आ रहे थे, कुछ कारण से उन्हें दूसरे मकान में स्थानांतरित करना पड़ा। इस नये मकान से सटे एक परिवार के वृद्ध व्यक्ति प्रतिदिन सबेरे ठीक छ: बजे भगवान की पूजा करने के क्रम में शंख व घंटी कुछ देर तक बजाया करते थे। उसकी आवाज से दीपू की नींद प्रतिदिन सुबह–सुबह खुल जाती। वह चाहकर भी उस आवाज को आने से रोक नहीं सकता था। एक–दो दिन तो उसे सुबह–सुबह उठने में अंदर ही अंदर चिढ़–चिढ़ापन भी अनुभव हुआ पर धीरे–धीरे ही सही अब वह ठीक सुबह छ: बजे जैसे ही शंख व घंटी की आवाज उसके कानों तक जाती उसकी नींद बरबस टूट जाती और वह बिस्तर छोड़ देता। फिर तैयार हो समय पर विद्यालय पहुँच जाया करता।

दीपू के माँ–बाप भी समझने लगे थे कि शंख व घंटी की आवाज उनके लिए वरदान से कम नहीं। वे मन ही मन पड़ोसी को धन्यवाद भी देते।

पर जीवन–मरण का क्या भरोसा। आज दोपहर बाद जब दीपू अपने विद्यालय से घर वापस आया तो देखा कि सुबह–सुबह शंघ व घंटी बजाकर पूजा करने वाले काका के यहाँ भीड़ लगी थी। पता चला कि वे स्वर्ग सिधार गए। उसे एक पल तो लगा कि अब अच्छा हुआ सुबह–सुबह शंख व घंटी की आवाज उसे नहीं जगा पाएगी परंतु दूसरे ही पल वह अन्य लोगों की आँखों में आँसू देख दुखी हो चला। आखिर था तो वह अभी बच्चा ही। वह इन सब घटनाओं से विमुख हो रात में गृहकार्य करने के बाद खाना खाकर सो गया।

परंतु अगली सुबह बिना शंख व घंटी की आवाज सुने ठीक छ: बजे दीपू की नींद खुल चुकी थी। वह अपना बिस्तर छोड़ समय पर तैयार हो विद्यालय के लिए निकल चुका था।

दीपू की माँ ने अपने पति से पूछा– ''आज न तो शंख न ही घंटी की आवाज आई फिर भी दीपू ने ठीक समय पर बिस्तर छोड़ दिया। आखिर उसमें ऐसा परिवर्तन आया भी तो आया कैसे ?

पति ने उत्तर दिया– ''जैविक घड़ी।''

– गिरिडीह (झारखण्ड)

कहानी जूते की

– हरीशचंद्र पांडे

आज अगर फैशन के लिए और टीम–टाम के लिए जूते पहने जाते हैं तो एक समय ऐसा भी था जब लोग अपने पैर की सुरक्षा के लिये कवच के रूप में जूते का प्रयोग करते थे, लेकिन क्या कभी हमने इसके निर्माण या आविष्कार पर ध्यान दिया है। उत्तर आयेगा नहीं लेकिन जूते की खोज भी आश्चर्यजनक है। जूतों का निर्माण सबसे पहले मिस्र में हुआ था। इन जूतों का तला किसी चमड़े का या पानी में जाने वाले एक विशेष प्रकार के पौधे का होता था। आधुनिक युग के जूतों की यह बात ईसा से दो हजार वर्ष पहले की है। जूतों के बारे में भारत में भी एक कहानी प्रचलित है।

एक बार एक राजा प्रजा के समाचार लेने गुप्त रूप से घूम रहा था। घूमते–घूमते उसके पैर खराब हो गये। उनमें फफोले पड़ गये। राजा दर्द के मारे नाराज होकर मंत्रियों से बोला कि ऐसी कोई वस्तु खोजी जाये जिसके उपयोग से पैदल चलने में सुविधा मिले व धूल भी न उड़ने पाये। राजा के आदेश से सभी लोग परेशान थे।

दिनभर नौकर पानी छिड़काव, सफाई करते और धूल फिर भी आ जाती थी। मंत्री ने राज संकट दूर करने के लिये पुरस्कार की घोषणा कर दी। इस पर भी समस्या का निदान न हो सका। एक दिन एक वृद्ध पुरुष आया। उसने राजा के पैरों का नाम लिया और चमड़े के जूते पहना दिये। इस पर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह आराम से पैदल घूमता और उसे तनिक भी दु:ख न होता था। राजा ने बहुत धन उस व्यक्ति को दिया। यह जूतों के प्रचलन की प्रथम सीढ़ी थी आधुनिक भारत में।

इसी प्रकार ठंडे देशों में लोग चमड़े के थैलों में घास बिछाकर पैरों में पहनते थे। इस थैले को पैर के ऊपर रस्सी से कस लिया जाता था। धीरे–धीरे सुविधा अनुसार जूतों के आकार–प्रकार में भी परिवर्तन हुआ। १६वीं शताब्दी में जूते आगे से बहुत चौड़े होते थे। सत्रहवीं शताब्दी में ऊँची एड़ी के जूतों का फैशन चला। फिर अठारहवीं शताब्दी में ऐसे जूतों का प्रचलन बंद हो गया था लेकिन समय के बीतते ही ऊँचे एड़ी के जूते हील टाइप पुन: चलन में आ गये थे।

भारत में चमड़े के जूतों का इतिहास वर्ष पंद्रह सौ से शुरू हुआ। बताया जाता है कि अकबर के समय में अरब देशों से हींग मंगाई जाती थी। यह हींग ऊँट के चमड़े से बनी मशकों में लाई जाती थी। अकबर की राजधानी आगरा में हींग की बहुत बड़ी मण्डी थी। धीरे–धीरे व्यापारियों को लगा कि खाली मशकों को फेंकने की बजाय उनसे जूतों का निर्माण किया जा सकता है। इस तरह हींग की मण्डी जूतों की मण्डी बनी। आज यह जूतों की सबसे बड़ी मण्डी है। आज एक अनुमान के अनुसार आगरा, शहर में लगभग बीस हजार जूतों के निर्माण की छोटी–छोटी दुकानें हैं। तथा तीन सौ के लगभग मध्यम श्रेणी के कारखाने हैं।

ये कारखाने पूर्ण रूप से जूते का उत्पादन कर रहे हैं। आगरा जूता मण्डी में एक सूत्र के अनुसार एक लाख कारीगर जूता निर्माण उद्योग में लगे हुए हैं।

आज भारत में जूता बनाने की कई प्रसिद्ध कंपनियाँ हैं। ये कंपनियाँ आजकल चमड़े के अलावा, फोम, कृत्रिम चमड़ा, प्लास्टिक, रबर तथा कपड़े के जूते बनाती हैं। अब तो नये आविष्कार के अनुसार प्लास्टिक की पतली सतह से ढके हुए चमड़े के जूते बनने लगे हैं जिनमें पॉलिश करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जूते सचमुच बहुत उपयोगी है, फैशन और अंदाज तो बाद की बात है।

– हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

कहाँ गए मवेशी

– रजनीकांत शुक्ल

हमारे देश के उत्तर पूर्व में तिब्बत की सीमा से सटा हुआ राज्य है अरुणाचल प्रदेश। इसी प्रदेश में लोहित नाम का एक जिला है। इस जिले के हायूलियांग में उस दिन जब ओबिराज सुब्बा अपने घर के अन्दर घुसा तो उसकी माँ ने कहा– ''ओबी, घर पर मवेशी नहीं दिख रहे हैं जरा देख तो किधर गए?''

''अभी देखता हूँ माँ।'' कहकर ओबी घर से बाहर उल्टे पाँव लौट गया। घर से बाहर निकलकर उसने अपनी खोजी निगाहें दौड़ाईं तो सड़क के उस पार उसे अपने दो तीन दोस्त खेलते हुए दिखाई दिए। वह दौड़कर उनके पास पहुँचा और अपने मवेशियों के बारे में पूछा। उन्होंने जब अनभिज्ञता जताई तो ओबी ने उन्हें साथ ले लिया और मवेशियों की खोज में आगे की ओर चल दिया।

ओबिराज सुब्बा बारह–तेरह वर्ष का किशोर था। लम्बूतरे चेहरे का दुबला–पतला ओबी देखने में ही सीधा–सादा लगता था। वह वर्ष १९९९ के मई महीने की छः तारीख थी। खोजता पूछता हुआ ओबिराज अपने दोस्तों के साथ लोहित नदी के किनारे जा पहुँचा कि शायद उसके मवेशी घूमते–चरते कहीं इधर तो नहीं निकल आए।

अभी वह अपनी निगाहें दौड़ाता हुआ मवेशियों को खोज ही रहा था कि तभी उसके कानों में चीख पुकार की आवाजें पड़ीं। उसने दौड़ते हुए आगे बढ़कर देखा कि लोहित नदी की तेज लहरों में चार लड़कियाँ बहती चलीं जा रही हैं। वे सहायता के लिए चीख–पुकार रही थीं।

''अरे, यह क्या!'' कहते हुए उसने अपने मित्रों की ओर देखा जो स्वयं यह दृश्य देखकर भौचक्के थे। अधिक सोच विचार का समय नहीं था। नदी का प्रवाह तेज था।

ओबी ने अधिक देर नहीं लगाई और उनकी ओर दौड़ता चला गया। नदी के बिलकुल किनारे पहुँचकर उसने उसमें छलाँग लगा दी। वह तैरता हुआ तेजी से उनकी ओर बढ़ा। जल्दी ही वह उनमें से एक लड़की अयांग तामुक के पास जा पहुँचा। वह डूबने से बचने के लिए लहरों से संघर्ष कर रही थी।

ओबी ने उसके पास पहुँचकर फुर्ती से उसके बालों को अपने हाथ से पकड़ लिया। फिर उसे खींचता हुआ वह किनारे की ओर चल दिया। किनारे के करीब पहुँचकर उसके मित्रों ने आगे बढ़कर उसे पानी से बाहर निकाल लिया। इस बीच बाकी तीन लड़कियाँ पानी के साथ बहती हुई आगे निकल गईं थीं।

उन्हें बचाने के लिए ओबी एक बार फिर दौड़ा और आगे जाकर नदी में कूद गया। उसके साथी घबराकर मदद माँगने के लिए गाँव की ओर दौड़े। उन्हें लग रहा था कि नदी के तेज प्रवाह को देखते हुए बाकी तीनों लड़कियों को बचा पाना अकेले ओबी के बूते की बात नहीं होगी।

उधर ओबी तेज गति से तैरता हुआ नदी में बही जा रही उन लड़कियों के करीब तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। इस बार वह जिस लड़की के पास पहुँचा वह सुशीला सुब्बा थी। उसने आगे बढ़कर सुशीला की कमीज को मजबूती से पकड़ लिया। फिर वह सुशीला को लेकर किनारे की ओर चल दिया।

नदी की तेज लहरों का मुकाबला करते हुए किनारे तक सुशीला का वजन लेकर किनारे तक आना उस नन्हें बच्चे ओबी के लिए इतना आसान नहीं था। मगर हिम्मत न हारते हुए वह लगातार आगे बढ़ता रहा और आखिरकार उसने सुशीला के साथ नदी का सुरक्षित किनारा पा लिया।

उसने सुशीला को पानी से बाहर निकाला। उसके साथ सहायता के लिए दूसरों को बुलाने के लिए गए थे। उसने सुशीला को सुरक्षित लिटाया और दूसरे बहती लड़कियों को बचाने के लिए उठ खड़ा हुआ। अब तक उसके मित्र कुछ लोगों को लेकर आ गए थे। उनके साथ-साथ ओबी भी बाकी दो लड़कियों को नदी से बाहर निकालने के लिए आगे-आगे दौड़ने लगा। पास जाकर उसने देखा तो उसे उनमें से एक भी लड़की दूर-दूर तक नहीं दिखाई दी। पानी का तेज बहाव इतनी देर में उन्हें बहाकर पता नहीं कितनी दूर तक ले जा चुका था।

उन्होंने दौड़कर आगे तक जाकर देखा मगर वे दोनों उनकी नजरों से ओझल हो चुकीं थीं। निराश होकर वे सब वापस लौटकर आ गए। पानी का तेज बहाव अरुण सुब्बा और बीनू सुब्बा को अपने साथ बहाकर ले जा चुका था। उन दोनों बालिकाओं को नहीं बचाया जा सका, किन्तु अपने साहस और हिम्मत से आबिराज ने अयांग तामुक और सुशीला की जान बचा ली थी वरना वे भी उन दोनों की तरह पानी के उस बहाव की भेंट चढ़ जातीं।

ओबिराज की इस बहादुरी के कार्य के कारण ओबी को वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया और अगले वर्ष गणतंत्र दिवस पर देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने ओबिराज सुब्बा को इस राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

नन्हें मित्रो!

हम हरदम तैयार कभी भी तुम हमको अजमा लो,
हम सोने से खरे निकलते हैं, अग्नि में डालो,
आगे जीवन में जाना आँखों में सपना पालो,
अगर डूबता देखो कोई बढ़कर उसे बचा लो,

– दिल्ली

गाने वाला चूहा

– सुधा दुबे

दिनभर अपने बिल में छुपे–छुपे चूहा थक गया था और उसे भूख भी लगी थी। वह अपने बिल से निकल कर बाहर आया और झोपड़ी में बूढ़ी अम्मा के पास गया। बूढ़ी अम्मा अपने खाने के लिए गोल–गोल बाटी बना रही थी। वह उससे बड़े प्यार से बोला–

''ए माई! मुझे भी बाटी दे दे।''

अम्मा ने कहा– ''तुम इसके बदले मुझे क्या दोगे?'' चूहे ने देखा अम्मा की बाटियाँ ठीक से लकड़ी ना होने के कारण सिक नहीं पा रही थी। वह दौड़ा–दौड़ा जंगल गया और वहाँ से लकड़ी लेकर आया, उसने लकड़ी अम्मा को दी। और बूढ़ी अम्मा ने प्रसन्न होकर उसे बाटी दी।

आधी बाटी खाकर वह गाते हुए आगे बढ़ा...

आड़ गयो बाढ़ गयो
वहाँ से लायो लकड़ी
लकड़ी मैंने अम्मा को दी
अम्मा ने मुझे बाटी दी....

गाते–गाते आगे बढ़ने पर उसे कुम्हार मिला। उसका बच्चा भूख के मारे रो रहा था।

उसने पूछा– ''कुम्हार भैया! मुन्ना क्यों रो रहा है?''

''दो दिन से मेरे मटके नहीं बिके हैं। मेरे पास एक धेला पैसा नहीं है। बच्चा भूख के मारे रो रहा है।''

''मैं मुन्ना के लिए बाटी दूँगा तुम मुझे क्या दोगे?''

कुम्हार बोला– ''मेरे पास तो मटके हैं।'' चूहे ने बाटी बच्चे को दी, कुम्हार ने उसे छोटा–सा मटका दिया। बच्चा बाटी खाकर चुप हो गया और हँसने लगा।

चूहा गाते हुए आगे बढ़ा...

आड़ गयो बाढ़ गयो
वहाँ से लायो लकड़ी
लकड़ी मैंने अम्मा को दी
अम्मा ने मुझे बाटी दी
बाटी मैंने कुम्हार को दी
कुम्हार ने मुझे मटका दिया...

मटका लेकर वह आगे जा ही रहा था कि आगे एक ग्वाला टूटे मटके में गाय का दूध दूह रहा था उसने पूछा– ''तुम टूटे मटके में दूध क्यों दूह रहे हो?''

उसने कहा– ''मेरा मटका कल फूट गया और नए मटके के लिए मेरे पास पैसे नहीं है।''

तो चूहे ने कहा– ''मैं तुम्हें मटका दूँगा तुम मुझे क्या दोगे ?''

ग्वाले ने कहा– ''मेरे पास तो बस दूध है।''

''ठीक है तुम दूध मुझे दे दो।''

टूटे मटके में दूध लेकर वह गाता चला जा रहा था....

आड़ गयो बाढ़ गयो
वहाँ से लायो लकड़ी
लकड़ी मैंने अम्मा को दी
अम्मा ने मुझे बाटी दी
बाटी मैंने कुम्हार को दी
कुम्हार ने मुझे मटका दिया
मटका मैंने ग्वाले को दिया

ग्वाले ने मुझे दूध दिया.....

वह गाते–गाते आगे बढ़ रहा था कि उसे रास्ते में एक बिल्ली मिली।

बिल्ली बोली–

''म्याऊँ म्याऊँ
मैं तो तुमको खाऊँ।''

''चीं चीं चीं चीं'' चूहा बोला–

''बिल्ली मौसी मुझे मत खाओ मैं तुम्हें दूध दूँगा तुम दूध पी लो।''

दूध का नाम सुनकर बिल्ली का ध्यान चूहे से हटकर दूध की ओर चला गया और वह जीभ लपलपाने लगी। चूहे ने टूटे मटके का दूध बिल्ली मौसी के सामने रखा और जैसे ही बिल्ली दूध पीने लगी चूहा वहाँ से नौ–दो ग्यारह हो गया।

और अपने बिल में जाकर अपनी चुहिया माँ को सारी बात गाकर सुनाई...

आड़ गयो बाढ़ गयो
वहाँ से लाओ लकड़ी
लकड़ी मैंने अम्मा को दी
अम्मा ने मुझे बाटी दी
बाटी मैंने कुम्हार को दी
कुम्हार ने मुझे मटका दिया
मटका मैंने ग्वाले को दिया
ग्वाले ने मुझे दूध दिया
दूध मैंने बिल्ली मौसी को दिया...

चुहिया माँ बोली– ''बेटा! यहाँ–वहाँ अकेले मत घूमा करो जान बची तो लाखों पाए लौट के बुद्धू घर को आए।''

''जी अम्मा! आगे से ध्यान रखूँगा।''

इस प्रकार चूहे ने सबका सहयोग भी किया और अपनी होशियारी से बिल्ली से अपनी जान भी बचा ली।

– भोपाल (म. प्र.)

आओ टाँके लगाना सीखें

– डॉ. मनोहर भण्डारी

गंगाधर जी ने कहा– ''खेलते समय कई बार बड़ी चोट लग जाती है।''

उन्होंने रामू से कहा– ''बेटा अब तुम यह बताओ कि बड़े घाव का उपचार कैसे करना चाहिए?''

रामू ने कहा– ''खून रुक जाने पर कपड़ा घाव पर रखें। घाव को १०-१५ मिनिट तक जोर से दबाए रखें।''

बाबूलाल जी ने पूछा– ''उसके बाद क्या करें?''

रामू ने कहा– ''खून रुक जाने पर कपड़ा धीरे से हटा दें। घाव के दोनों किनारे आपस में मिला दें। उन्हें मिलाकर चिपकाने वाली पट्टी में से पतली पट्टियाँ काटकर चिपका दें। फिर घाव पर साफ सफेद कपड़े की पट्टी बांध दें।''

बाबूलाल जी ने पूछा– ''पट्टी बाँधने के पहले चिपकाने वाली पट्टी क्यों बांधना चाहिए?''

रामू ने कहा– ''घाव के दोनों किनारे आपस में मिल जाए तो घाव थोड़े समय में ठीक हो जाता है। घाव में टाँके इसीलिए लगाये जाते हैं। टाँकों के कारण घाव के दोनों किनारे आपस में मिल जाते हैं।''

माधो नाम के एक आदमी ने पूछा– ''क्या टाँके लगाना आसान काम होता है?''

रामू ने कहा– ''हाँ यदि घाव सीधा कटा हो तो।'' माधो ने फिर पूछा– ''टाँकों के लिए तो सुई और धागा दोनों ही अलग तरह के होते होंगे?''

रामू ने कहा– ''हाँ यह सच है। परन्तु कपड़े सीने की सुई और पतले धागे से भी टाँके लगाए जा सकते हैं। धागा रेशमी हो तो ठीक रहता है।''

माधो बोला– ''क्या तुम हमें टाँके लगाना सिखा सकते हो?''

रामू ने कहा– ''हाँ हाँ क्यों नहीं! टाँके लगाना बड़ा आसान है। टाँके लगाना सिखाने के लिए तो हमने किशनगढ़ से मौसंबी मँगवाई थी।'' सभी लोगों को अचरज हुआ।

सब बोले– ''मौसंबी का टाँकों से क्या संबंध?''

रामू ने कहा– ''अब हमारे शरीर में चोट लगती है तब कभी-कभी हमारी चमड़ी कट जाती है। चमड़ी के नीचे एक पतली परत और रहती है। उसके नीचे चरबी और मांस होता है।

ठीक ऐसे ही जैसे मौसंबी में मोटे छिलके के नीचे पतला छिलका होता है। फिर उसके नीचे गूदेदार भाग होता है।''

फिर रामू ने जेब से मौसंबी निकाली और उस पर पत्ती से एक छोटा-सा चीरा लगा दिया। उसने चीरा लगी मौसंबी सबको बताई।

रामू ने आगे बताया– ''सबसे पहले कपड़े सीने की सूई में धागा पिरो दें। फिर सूई धागे को साफ पानी में १० मिनिट तक उबालें।''

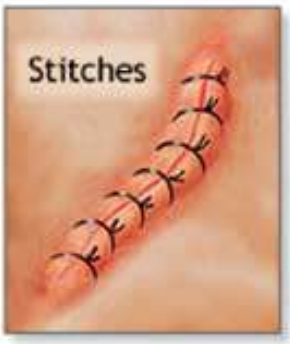

मानमल ने पूछा– ''फिर क्या करें?''

अपने हाथों को साबुन और उबले हुए पानी से ठीक प्रकार से धो लें। घाव ठीक तरह साफ करें। घाव के एक किनारे की चमड़ी की परत में ऊपर से सूई घुसाएँ। और उसे दूसरे किनारे की चमड़ी की परत के भीतर से बाहर निकाल लें। फिर सूई को बाहर खींच ले और गाँठ लगाकर बाकी का धागा काट दें।

पहला टांका घाव के बीचो–बीच लगाना चाहिए। फिर घाव को बंध करने के लिए जितनी आवश्यकता समझें, उतने टाँके लगा दें। फिर रामू ने मौसंबी पर टाँके लगा कर उन सबको दिखाये।

चौथमल ने पूछा– ''इसके बाद क्या करना चाहिये?''

रामू ने कहा– ''साफ धुले हुए कपड़े को तह (घड़ी) करके घाव पर रख दें और पट्टी बाँध दें। इससे घाव पर मक्खियाँ नहीं बैठती और धूल भी नहीं लगती हैं।''

चौथमल ने पूछा– ''क्या सभी तरह के घावों में टाँके लगाए जा सकते हैं?

रामू ने कहा– ''नहीं, जो घाव साफ सुथरा हो, २४ घंटे से कम पुराना हो तो उसे ही टाँकों से बन्द कर सकते हैं।

आदमी या जानवर के काटने से बने घाव को खुला ही रखना होता है। पुराने और मवाद वाले घाव पर भी टाँके नहीं लगाना चाहिये।''

चौथमल ने पूछा– ''टाँके कितने दिन बाद काटना चाहिये?''

रामू ने कहा– ''साधारणत: ८ से १० दिन में टाँके काट देना चाहिए। घाव में मवाद (पीप) हो जाए तो उसी समय टाँके काट देने चाहिये।''

रामू ने थोड़ा रूककर कहा– ''हाँ एक बात याद रखना चाहिये। जिस कैंची से टाँके काटने हों। उसे साफ पानी में १० मिनिट तक अवश्य उबाल लें। अपने हाथ भी साबुन से ठीक तरह से धो लें। टाँकों को गाँठ के पास से काट दें। फिर गाँठ पकड़कर टाँके के धागे को बाहर खींच लें।''

– इन्दौर (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 18

देवांशु वत्स

1. तपाया हुआ मक्खन।
2. महादेवी वर्मा के संस्मरण का एक पात्र।
3. घृतकुमारी, ग्वारपाठा।
4. पांचों अंगुलिया ... ...।
5. आनंद मनाना, ... जलाना।
6. खूब घुलमिल जाना।

1.	घी					
2.	घी					
3.	घी					
4.	घी					
5.	घी					
6.	घी					

उत्तर: 1. घी, 2. घीया, 3. घीकुआर, 4. घी में होना, 5. घी के दीपक, 6. घी-खिचड़ी होना।

खोई हुई हँसी

– समीर गांगुली

पात्र– इतिहासकार, वैज्ञानिक, सेनापति, बिदूषक, गरीबा, झुरमुट सिंह, राजा, पहला बच्चा, दूसरा बच्चा (अँधेरे मंच में धीरे–धीरे बढ़ता प्रकाश)।

नेपथ्य से गूंजती आवाज– यह कहानी है उस देश की, जहाँ विज्ञान, राजनीति, धर्म और समृद्धि ने उन्नति के शिखर चूमे, जहाँ मनुष्य का इतना विकास हुआ कि उसने आत्मविश्वास के साथ गर्वघोष किया– मैं ही हूँ इस संसार का सृष्टा और अपना भाग्य निर्माता, सूरज, चाँद, सितारे, ऋतुएँ और प्रकृति सब हैं मेरे दास।

यह कहानी है उस देश की, जहाँ के बुद्धिजीवी आज किताबों और ग्रंथों में प्रमाण ढूँढ रहे हैं। सबूत चाह रहे हैं कि क्या मनुष्य सचमुच कभी हँसता था?

अगर हँसी मनुष्य में कहीं थी तो वह गायब क्यों हुई? मनुष्य हँसना कैसे भूल गया? यह मत सोचिए, कि ऐसा संभव नहीं... हो सकता है उस काल, उस युग के शासक वर्ग ने हँसने पर रोक लगा दी हो या फिर हँसने की इतनी आजादी दी हो कि हँसी इतनी बेमानी, इतनी अर्थहीन हो गई कि एक दिन आखिर वह गायब ही हो गई।

यह कहानी नहीं हकीकत है किसी एक देश की।

(मंच पर पूरा प्रकाश)

सभा भवन का दृश्य– तीन कुर्सियों पर वैज्ञानिक सेनापति और इतिहासकार बैठे हैं, गरीबा हाथ जोड़े खड़ा है और विदूषक व्यर्थ मटक रहा है।

इतिहासकार– (खड़े होकर हाथ की मोटी किताब को खोलते हुए)।

४५६ वर्ष, नहीं ५६४, नहीं–नहीं ४६५ वर्ष पहले तक आदमी यानी तुम (गरीबा की ओर संकेत किया), मैं और ये सब... हँसना जानते थे। यह किताब बताती है आदमी छप्पन प्रकार के खाने खाता था और छप्पन प्रकार से हँसता था।

गरीबा– हँसने का मतबल... हुजूर?

इतिहासकार– हँसना!!! किताब बताती है आदमी घोड़ों और गधों की तरह हँसता था। लकड़बग्घे की हँसी हँसता था और ऐसे हँसता था कि झरने फूट पड़ते थे, पहाड़ टूट पड़ते थे। तलवारें खनक उठती थी। ताज उड़ जाते थे.... इतनी ताकत थी हँसी में। सो गरीबा, तुम्हें हम दूर गाँव से पकड़ कर लाए हैं, गांव से कोई भी चीज जल्दी गायब नहीं होती। भूत अब भी वहाँ है, अज्ञान है, अशिक्षा है, फिर हँसी भी अवश्य होगी। सो तुम्हें हँसना होगा–हँस कर

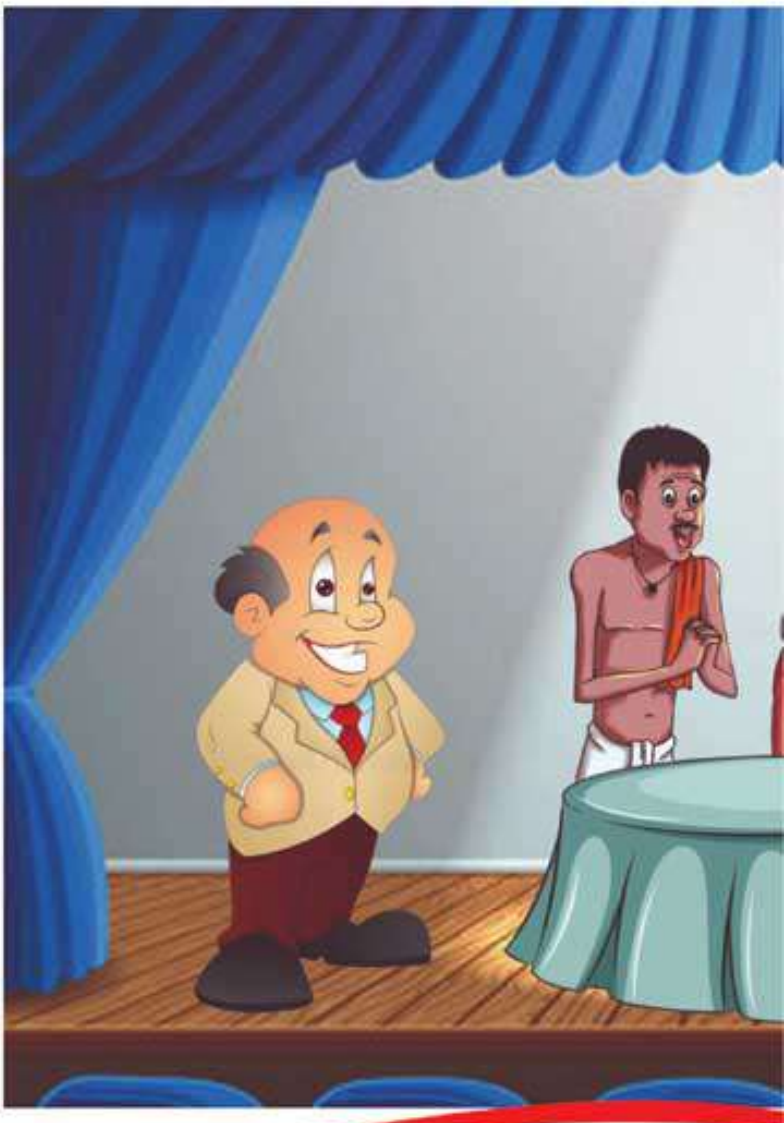

दिखाओ। गरीबा! तुम हमें हँस कर दिखाओ।

गरीबा– मगर जी, ये हँसना होता क्या है? बीमारी हो, तो वास्ता पड़ा होगा, जुल्म हो, तो भी वास्ता पड़ा होगा, कोई भयंकर जानवर हो तो नाम सुना होगा। अब जिसका ढेंगा भी ना मालूम, उसे क्या दिखाऊँ?

विदूषक– चल, जेब दिखा अपनी। और तेरे मुँह के अंदर क्या है? कल अपना खेत खोद कर देखना, अपने नाना का हुक्का फोड़कर देखना और देखना अपने पोते की मुट्ठी खोलकर।

वैज्ञानिक– (उठ कर अपनी किताब बंद करते हुए) ठहरो! एक फॉर्मूला मिल गया–लाफिंग गैस। साईंस की कोई गवाही नहीं चाहिए। बस फॉर्मूला फिट किया और चुटकी बजाते ही समस्या का हल

हाजिर। लाफिंग गैस! झुरमुट सिंह फॉर्मूला लाओ।

(झुरमुट सिंह बरतन में धुएँदार चीज लेकर प्रवेश करता है।)

वैज्ञानिक– सुंघाओ इसे। अभी हँस देगा यह (चारों तरफ देखता है) सभी कैमरे–वीडियो तैयार रहे–सही की सबसे खूबसूरत घटना घटने जा रही है।

विदूषक– दर्शको! सावधान। अब गरीबा हँसेगा। कितना रोमांचकारी होगा वह क्षण। जब आदमी हँसेगा। सांस रोक कर देखिए यह नजारा।

(गरीबा को लॉफिंग गैस सुंघाई जाती है। वह जोरों से खांसता है फिर रोने लगता है।)

वैज्ञानिक– देखो.... देखो, क्या बोला था? हू....उ....हू। सफल हो गया। संसार भर के मनुष्यों, देखो–देखो यही है आदमी की खोयी हुई हँसी... कितनी खूबसूरत है न हँसी।

विदूषक– यह हँसी नहीं है।

इतिहासकार– हाँ, यह हँसी नहीं है।

गरीबा– (रोते हुए) मैं हँस नहीं मर रहा हूँ।

सेनापति– खबरदार गरीबा! अगर तुम हँसे बगैर मर गए, तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। कहे देता हूँ। फाँसी पर लटका दूँगा।

इतिहासकार– (किताब पलटते हुए) एक मिनट! इसमें यह भी लिखा है कि विदूषकों का काम हुआ करता था लोगों को हँसाना।

विदूषक– झूठ! हमारी खानदानी डायरी में लिखा है कि हमारा खानदानी धंधा है आदमी को बेवकूफ बनाना। पर हमारे दादा के लकड़दादा के पकड़दादा ने उसमें लिख छोड़ा कि आदमी खासा बेवकूफ हो चुका है, उसे और बेवकूफ बनाना मुमकिन नहीं। सो नाई का धंधा अच्छा है। यही राज है हमारे उस्तरे का चलाने का और हमने तो आज तक किसी को हँसते नहीं देखा, जब उसकी गरदन पर उस्तरा रखा हो।

गरीबा– साहेब हम जाएं वापस?

सेनापति– तुम्हारी यह हिम्मत की बिना हँसे यहाँ से हिलने की सोच रहे हो?

विदूषक– हुर्रा... याद आ गया... मैं जानता हूँ... हँसना।

सभी एक साथ– क्या?

विदूषक– हाँ, देखो... देखो (वह गधे की तरह रेंगता है, कुत्ते की तरह भौंकता है।) यही है हँसी।

सेनापति– नहीं है।

विदूषक– तो?

इतिहासकार– तुम गधे हो।

सेनापति– कुत्ते हो।

(विदूषक रोना शुरु करता है।)

सेनापति– झुरमुट सिंह, इसे ले जाओ बर्फ की सिल्ली पर लिटाओ, तब तक, जब तक इसको ढंग से हँसना न आए।

(झुरमुट सिंह विदूषक को पकड़ कर बाहर ले जाता है।)

इतिहासकार– खुजली.... कै.... और नींद। इन्हीं जैसी कोई चीज होगी हँसी। पर नहीं, किताब बताती है कि आदमी बहुत प्रसन्न होने पर ही हँसता था।

सेनापति– बहुत खुश होकर तो हम दूसरों को चाबुक लगाते हैं।

वैज्ञानिक– और दूसरे राज्यों में बम गिरा कर खुश होते हैं।

इतिहासकार– तो बम गिरने और चाबुक मारने के बीच ही कहीं छिपी होगी हँसी।

(गरीबा इधर–उधर ताकते हुए भागने लगता है।)

सेनापति– अरे.... अरे.... मूर्ख, ठहर।

(दोनों मंच से बाहर चले जाते हैं।)

इतिहासकार– राजा को हँसी चाहिए। हँसी की ताकत से राजा का राज्य विस्तार होगा। एक–एक सैनिक हँसी लेकर चल पड़ेगा। दुनिया विजय करने और तब मुझे एक बाल्टी स्याही लेकर बैठना पड़ेगा– नया इतिहास लिखने।

(दो हँसते–खिलखिलाते बच्चों का प्रवेश)

पहला बच्चा– कितनी दूर आ गए हम।

दूसरा बच्चा– सारी दुनिया घूम कर ही लौटेंगे।

पहला बच्चा– कैसे उदास–उदास पुतले हैं यहाँ।

दूसरा बच्चा– इधर खड़ी मूर्तियों को देखो।

इतिहासकार– कौन हो तुम?

पहला बच्चा– ऐटरे पें.... टेंटरे टें.... सेटणें कें (हँसता है) ही–ही।

इतिहासकार– ये क्या है खी–खी? बीमार हो क्या?

दूसरा बच्चा– दुम ही पूँछ में बाँध के झाड़ू–छाड़ी अकल दो मन–ठन–ठना–ठन–ठन।

(दोनों बच्चे हँसते हैं सेनापति का हाँफते हुए प्रवेश)

सेनापति– राजा साहब आ रहे हैं। ऐ... ये कौन? दाँत क्यों फाड़ रहे हो तुम?

दोनों बच्चे– हम हँस रहे हैं।

सभी– (चौंक कर) क्याऽऽऽ?

दोनों बच्चे– जीऽऽऽ हाँऽऽऽ

इतिहासकार– मुझे भी सिखाओ हँसना। ही–ही–इ–ही हूँ।

(हँसने की असफल कोशिश करता है।)

पहला बच्चा– नहीं हँस सकते तुम! तुम्हारा उपचार करना पड़ेगा।

दूसरा बच्चा– आँखें बंद करो और पेट दिखाओ।

(इतिहासकार आँखें बंद करके पेट दिखाता है। पीछे से राजा का प्रवेश, चुपचाप देखता है।)

(पहला बच्चा अपनी जेब से एक चूहा, जिसकी पूँछ में रस्सी बंधी है, निकाल कर इतिहासकार के पेट पर रखता है। इतिहासकार गुदगुदी के कारण उछलता-कूदता है, जोरों से हँसता है। अवसर पाकर दूसरा बच्चा भी अपनी जेब से एक मेंढक निकाल कर सेनापति की कमीज के भीतर डाल देता है। सेनापति भी उछलने लगता है। दोनों बच्चे खूब हँसते हैं। राजा की भी बरबस हँसी फूट पड़ती है। विदूषक और गरीबा भी भीतर कूदते हैं और हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते हैं।)

(मंच पर धीरे-धीरे अँधेरा छाने लगता है।)

पीछे से आवाज- इस तरह इस देश में हँसी लौट आयी। पर सावधान! यह हँसी फिर कहीं खो न जाए, सो हँसते-हँसते रहिए। अपनी हँसी को आने वाली पीढ़ी को विरासत में दीजिए।

.....लेकिन इतना भी मत हँसिए कि इसका अर्थ ही कुछ न रहे। जाइए, हँसते-हँसते अपने-अपने घर। (मंच पर पूर्ण अँधेरा छा जाता है।)

- मुंबई (महाराष्ट्र)

बाल प्रस्तुति

मेरा विद्यालय मेरी दीदी

- आयुष्मान सिंह, हापुड़ (उ. प्र.)

उठो भाई अब आँखें खोलो, नल चलता है झट मुँह धोलो।
बीती रात अलार्म बोले, तेरे मित्रों ने दृग खोले।
बर्तन खनक उठे चौके में, बनने लगी चाय अति सुन्दर।
बाथरूम में हलचल छायी, छोटू भैया छोड़ रजाई।
देखो छः पच्चीस हो आया, दीदी ने है तुम्हें बुलाया।
उठ तैयार फटाफट होओ, दीदी के प्यारे मत सोओ।
पढ़ना-लिखना बहुत जरूरी, सोएं देर तक ना मजबूरी।
माँ ने अल्पाहार बनाया, बड़े प्रेम से टिफिन सजाया।
पढ़-लिखकर विद्वान बनेंगे, कभी न गन्दे काम करेंगे।
प्रथम बड़ों को करो प्रणाम, शिशु मन्दिर का हो ऊँचा नाम।

श्री बैजनाथसिंह

मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले का चाटीपुरा गाँव। कहते हैं समस्याएँ साहस पैदा करती हैं। यह क्षेत्र डाकू समस्या से ग्रसित है। इसलिए यहाँ के रहवासी उनसे लड़ने–भिड़ने के साहस भी परम्परागत रूप से प्राप्त करते थे। श्री बैजनाथ सिंह को भी साहस अपने पिता श्री रूपसिंह से ऐसे ही प्राप्त था।

घटना २२ अक्टूबर १९६९ की है मालपुरा गाँव के श्री मोहरसिंह और श्री उदयसिंह को डाकू सरूसिंह ने मौत के घाट उतार दिया है। यह घटना सुनते ही रहौली और मालपुरा के लोग इकत्र हुए और डाकुओं पर दनादन गोलियाँ दागने लगे। अचानक हुए जोरदार आक्रमण से बौखलाए डाकुओं ने भागते–भागते और एक ग्रामीण की हत्या कर दी।

गोलियाँ चलने की आवाज पास के चाहीपुरा के बैजनाथ जी ने सुनी तो बन्दूक सम्हाले डाकुओं को चुनौती देने चल पड़े। गाँव वालों ने डाकूदल की संख्या बहुत बताकर उन्हें रोकने का प्रयत्न किया पर वे डाकुओं का पीछा करने से नहीं चूके। आधे घंटे की मुठभेड़ अकेले बैजनाथ पूरे डाकूदल पर गोली बरसा रहे थे। तभी डाकुओं ने उन्हें घेरना चाहा। बैजनाथ जी ने मौर्चा बदलना चाहा पर कई गोलियाँ उन्हें भेद गईं। अदम्य साहस की इस मूर्ति को भारत सरकार ने मरणोपरांत **अशोकचक्र** से सम्मानित किया।

आपकी पाती

मास जनवरी 'देवपुत्र' है,
खिला–खिला सा अतिशय न्यारा।
आवरण पृष्ठ का चित्र रंगमय,
याद कराता बचपन प्यारा।
छब्बीस जनवरी गणतंत्र दिवस पर,
लगी सुप्रेरक 'अपनी बात'।
ध्वज के तीन रंगों का आशय,
जो समझे क्यों खाए मात।
'आओ भ्रमण करें', 'राजू का गुस्सा',
'परिश्रम सबसे बड़ा' कहानी।
'दो बातूनी', 'संतों का सपना',
'आलसी सूरज' कथा सुहानी
'अमर रहे गणतंत्र', 'पतंग',
'सरसों के फूल', 'विवेकानंद'।
रोचक, सामयिक कविताएँ,
लगीं सरस जैसे मकरंद।
ज्ञान बढ़ातीं चित्र कथाएँ,
सच्चे बालवीर, शिशु गीत।
बौद्धिक क्रीड़ा, विज्ञान व्यंग्य,
साहित्य धरोहर मन के मीत।
शिशु महाभारत, विस्मयकारी भारत,
धारावाहिक नव प्रस्तुतियाँ।
करें संस्कारित बालकमन,
सचमुच प्रशंसनीय संस्तुतियाँ।
एक मास की विकल प्रतीक्षा,
नूतन 'देवपुत्र' करवाता।
आते ही छा जाता मन पर,
हर सदस्य उसको दुलराता।

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', लखनऊ (उ. प्र.)

भगवान का शुक्र

चित्रकथा: देवांशु वत्स

उत्तर प्रदेश की राजकीय मछली

चितला

– डॉ. परशुराम शुक्ल

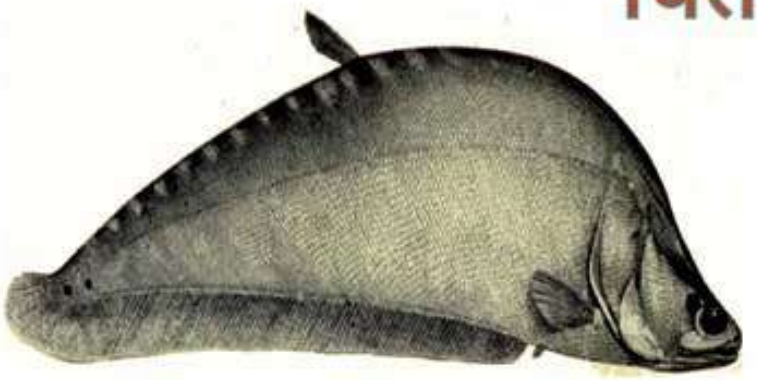

शानदार भारत की मछली,
बिजली खूब बनाती।
नदियों, तालाबों, झीलों में,
सभी जगह मिल जाती।।

गज भर लम्बी, पीठ धनुष–सी,
चपटी काया ऐसी।
रंग कत्थई, पीला इसका,
लगती चाकू जैसी।।

यह रोचक तैराक हमेशा,
आगे बढ़ती जाती।
और कभी फिर बिना मुड़े यह,
पीछे दौड़ लगाती।।

कीचड़, दलदल में रह सकती,
साँस हवा से लेती।
रह कर पानी के बाहर यह,
हमें चकित कर देती।।

नर सेता है अण्डे–बच्चे,
मादा दूर भगाता।
मादा का अपने बच्चों से,
भोजन वाला नाता।।

– भोपाल (म. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

बच्चों क्रिकेट मैच पर निबंध लिखो, जो पहले लिख लेगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा।

सभी बच्चे अपनी–अपनी कापी लेकर निबंध लिखने में जुट गए। तभी पप्पू ने कहा, मैंने लिख लिया।

शिक्षक ने उसकी कापी देखी तो उस पर एक पंक्ति लिखी थी। बारिश की वजह से मैच स्थगित कर दिया गया है।

*****

शिक्षक ने प्रश्न पूछा तो सोनू सिर खुजाने लगा।

शिक्षक– क्या प्रश्न तुम्हें कठिन लग रहा है?

सोनू– प्रश्न तो आसान है, पर उसका उत्तर कठिन लग रहा है।

*****

घर की पालतू बिल्ली के अचानक मर जाने पर नौकर जोर–जोर से रो रहा था। उसे देखकर मालिक ने पूछा– बिल्ली के लिए तुम इतना क्यों रो रहे हो?

नौकर– क्या कहूँ साहब, मैं तो लुट गया। अब सारा दूध पीने के बाद मैं किसका नाम लगाऊँगा?

*****

सोनू– तुम्हारा इनसे क्या रिश्ता है?

पप्पू– बहुत दूर का रिश्ता है, ये मेरा सगा भाई है।

सोनू– तो फिर दूर का रिश्ता कैसे?

पप्पू– क्योंकि, इसके और मेरे बीच छः भाई–बहन और हैं।

अपनी अपनी प्रतिभा

– यशपाल शर्मा

शोभित कक्षा ७वीं में पढ़ता था। वह बहुत ही होनहार बालक था। विद्यालय के सभी गुरुजन एवं उसके माँ–पिताजी को भी उस पर बहुत गर्व था। पढ़ने में तो वह होशियार था ही विद्यालय की अन्य गतिविधियों में भी वह बढ़–चढ़कर भाग लेता। जिस गतिविधि में वह भाग लेता उसमें उसका प्रथम आना तय ही होता। विद्यालय के शेष विद्यार्थी उसके आगे हथियार डाल देते थे।

गत सप्ताह उसने जिलास्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। तीन प्रतियोगिताओं में उसने जिलास्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। आज सोमवार को प्रार्थना सभा में प्रधानाचार्य जी ने उसे पदक पहनाकर सम्मानित किया। सचमुच आज दिन भर वह बहुत प्रसन्न था।

शाम को विद्यालय से लौटते समय कक्षाध्यापक जी ने द्वितीय मूल्यांकन का परिणाम उसकी डायरी में लिखकर अभिभावकों से हस्ताक्षर करवाने हेतु दिया। उसे देखते ही उसके होश उड़ गए। सामाजिक विषय में कम अंक होने से हमेशा कक्षा में प्रथम आने वाला शोभित आज तीसरे स्थान पर आया था। उसकी रुलाई फूटते–फूटते बची। उसे पूरा भरोसा था कि आज उसे घर पर जोर की डाँट पड़ने वाली है। पिताजी तो शायद पिटाई भी कर दें।

विद्यालय से सीधा घर न पहुँचकर वह कुछ देर उद्यान में बैठा रहा। थोड़ी देर अपने सहपाठी कपिल के साथ खेला। फिर देर शाम डरते–डरते घर पहुँचा। उसने देखा पिताजी अभी तक नहीं आए हैं। माँ बैठक में कुछ काम कर रही थी। डरते–डरते उसने अपनी डायरी हस्ताक्षर करने के लिए माँ के हाथ में दे दी।

माँ ने मुस्कुराते हुए डायरी खोली। प्रगति पत्रक देखते हुए ही वह उससे बात करने लगी, ''आज तुम्हारे विद्यालय से अर्चना दीदी का फोन आया था।''

शोभित के कान खड़े हो गए। उसे कँपकँपी छूटती–सी लगी। माँ ने बात जारी रखी।

''वो एक कहानी सुना रही थीं। सुंदरवन के जानवरों में एक बार प्रतियोगिताओं का आयोजन हो रहा था। कोयल की बच्ची सौंदर्य प्रतिस्पर्धा में हार गई। हाथी व कछुआ दौड़ में पीछे रह गए। हिरण व घोड़ा तैराकी स्पर्धा में स्थान नहीं बना पाए। बेचारी मछली तो उड़न स्पर्धा में भाग ही नहीं ले पाई। सभी जानवर बहुत उदास थे।''

यह सुनकर शोभित को हँसी आ गई, ''इसमें उदास होने वाली कौन–सी बात हो गई। हर जानवर

की अपनी क्षमताएँ होती हैं। सभी ने अपने-अपने क्षेत्र में तो श्रेष्ठ प्रदर्शन किया ही होगा न!''

''लेकिन वे कई स्पर्धाओं में हार भी तो गए थे।''

''हर व्यक्ति हर जगह एक जैसा प्रदर्शन कर पाए यह आवश्यक तो नहीं।''

''बिल्कुल सही कहा बेटा!'' घर में प्रवेश करते हुए उसके पिताजी ने कहा। मिठाई का एक डिब्बा उसके हाथ में देते हुए वे फिर बोले, ''चलो, इस बात पर अपनी मनपसंद इमरती खाओ और थोड़ी मेरे व माँ के लिए भी बचाकर रखना।''

शोभित ने अगले ही पल मिठाई का डिब्बा हाथ में लिया लेकिन वह फिर उदास होकर बुदबुदाया, ''लेकिन मेरा कक्षा में स्थान....''

''कोई बात नहीं बेटा! अगले मूल्यांकन में थोड़ा अतिरिक्त परिश्रम कर लेना। और न भी हो तो भी कितने सारे ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें तुम अपने अन्य मित्रों से आगे हो। जो भी करो, मन लगाकर व ईमानदारी से, परिश्रम से करो। परिणाम जो भी हो उसे हँसकर स्वीकार करना सीखो।''

''यानी आप मुझ पर नाराज नहीं हैं।''

''बिल्कुल नहीं! हम कभी अपने राजा बेटा से नाराज हो सकते हैं?'' उसकी माँ ने कहा।

''सच?''

''मुच!'' माँ ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए। वह माँ के गले से लिपटकर सुबकने लगा। उसका डर आँसुओं के साथ बह निकला। उसके होठों पर मुस्कुराहट थी।

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

कविता

फुलवारी

– डॉ. सत्यदेव आजाद, मथुरा (उ. प्र.)

सागर में मोती रहते हैं,
नभ में चंदा तारे।
बागों में गुलाब खिलते हैं,
रंग-बिरंगे प्यारे।।

डाल-डाल पर पंछी रहते,
सुन्दर गीत गुंजाते।
भिन्न-भिन्न सबकी बोली है,
सब मिल जुलकर गाते।।

पर इन सबसे भी सुन्दर,
भारत के बच्चे प्यारे।
भोले-भाले राज दुलारे,
हैं माँ की आँखों के तारे।।

उनके मन में छिपी हुई है,
भावी भारत की शुभ आशा।
भूल-भाल कर भेद-भाव को,
नव जीवन की परिभाषा।।

इनसे ही फूलेगी,
भारत जननी की फुलवारी।
सपने सब साकार बनेंगे,
प्रगति की बलिहारी।।

गधा जो राजा न बन सका

– शैलेन्द्र सरस्वती

बात उन दिनों की है जब दुनिया को बने कुछ ही दिन हुए थे। सभी जानवर भगवान से अपनी–अपनी विशेष विशेषताएँ पाकर बहुत प्रसन्न थे। भगवान की इच्छा से वे सभी मिलजुल कर बड़े आनन्द से अपना जीवन बिता रहे थे। शेर की ताकत को मानते हुए सभी ने उसे अपना राजा स्वीकारा तो हाथी को भी उसके सबसे बड़े शरीर का महत्व मानते हुए उसे समस्त पशु–पक्षियों ने जंगल का अंगरक्षक नियुक्त किया।

इस प्रकार सभी जानवरों–पक्षियों को अलग–अलग काम सौंपने का प्रयोजन था कि वे सभी अपनी ताकत का दुरुपयोग न कर, उसका अच्छे कामों में उपयोग करके जंगल की शांति को बनाए रखें।

एक दिन जंगल में गधे ने प्रवेश किया। आते ही उसने जंगल में उत्पात मचाना शुरू कर दिया। अब गधा आज के गधे की तरह तो सीधा–सादा था नहीं। भगवान की तरफ से उसे अपनी रक्षा के लिए दो नुकीले, धारदार सींग जो मिले थे।

लंबे सींगों की चमक और नुकीलापन देखते ही ताकतवर से ताकतवर जानवर का भी दिल बैठ जाता था। जो जानवर गधे से टक्कर ले लेता तो उसकी तो हड्डी–पसली एक होकर ही रहती। गधा पानी पीने जाता तो सभी जानवरों को उसे पानी पीने देने के लिए चुपचाप पीछे हटना पड़ता।

गधे के सींगों का डर इतना था कि पानी के मगरमच्छ भी उसे देखकर पेंदे में जा छिपे। गधा घास चरने मैदान में आता तो हाथी भी दुम दबाकर भाग खड़ा होता।

एक दिन कुछ जानवर व पक्षी शांति समझौते के उद्देश्य से गधे के पास पहुँचे– ''नमस्कार गधे भाई! आपकी ताकत के चर्चे जंगल के कोने–कोने में हो रहे हैं। बेशक, आपकी ताकत का कोई सानी नहीं हम सभी पशु–पक्षी चाहते हैं कि आप अन्य जानवरों की तरह अपनी ताकत का उपयोग जंगल की रक्षा के लिए करें तो कितना अच्छा हो।'' मैना ने अपनी मधुर आवाज में गधे का अभिनंदन करते हुए कहा।

''तुम्हारे कहने का मतलब है कि मुझे जंगल का नौकर बन जाना चाहिए।'' गधे ने आँखें लाल करते हुए मैना से कहा। ''नहीं, नहीं, गधे भाई! मैना के कहने का मतलब है कि आप अपनी ताकत का सदुपयोग करके सभी जानवरों के साथ मिलजुल कर रहो। इस तरह मिलजुल कर रहने से समय पड़ने पर कई छोटे–बड़े जीव भी आपके काम आ सकते हैं।'' हिरण ने विनम्रता से गधे से कहा। ''मैं तुम सभी की चिकनी–चुपड़ी बातों में नहीं आने वाला। तुम सभी को मुझसे डरकर रहना चाहिए।'' कहते हुए गधे ने अपने सींगों की ताकत पर घमंड करते हुए सभी जीवों को धमकाते हुए भगा दिया।

''अरे! देखो तो इस गधे को अपने सींगों पर कितना घमंड है।'' तोते ने हैरान होते हुए कहा। ''हाँ! लेकिन इस गधे का घमंड अधिक दिनों तक नहीं टिकने वाला।'' लोमड़ी ने तोते से कहा। ''हाँ, लोमड़ी बहन! तुम तो हम सभी जानवरों में होशियार मानी जाती हो। क्या तुम्हारे पास इस घमंडी को सही रास्ते पर लाने का कोई उपाय है?'' बंदर ने पूछा।

''अभी तो मेरे पास कोई उपाय नहीं है, किन्तु यदि हम सभी मिलजुल कर इस गधे की हर हरकत पर नजर रखें तो इसकी कोई न कोई कमजोरी हमारे हाथ लग सकती है। एक बार इसकी कोई कमजोरी हमारे हाथ आ गई तो इसके घमंड को पल भर में दूर किया जा सकता है।'' लोमड़ी ने अपना दिमाग लगाते हुए बंदर से कहा।

बस! फिर क्या था। लोमड़ी की बात को मानते हुए सभी पशु–पक्षी आते–जाते गधे पर छुपकर नजर रखने लगे। आखिरकार एक दिन कबूतर ने गधे की कमजोरी पकड़ ही ली। दोपहर का समय था। कबूतर आक की झाड़ियों में छिपकर गधे पर नजर गड़ाए हुए था। गधा घास खाने के बाद गर्मी की दोपहर में बरगद के पेड़ के नीचे सोने की तैयारी कर रहा था। सोने से पहले गधे ने सावधानीपूर्वक इधर–उधर देखा और फिर किसी अन्य जीव को अपने आसपास न पाकर, निश्चिंत होकर अपने सींगों को सिर से उतारने लगा। कबूतर ने यह देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। गधे ने अपने दोनों सींग उतारकर बरगद की खोह में छिपा दिए और थोड़ी देर में खर्राटे भरने लगा।

''शाबाश कबूतर! अब हम में से किसी एक को गधे के सींग चुराने होंगे। जब वह सो रहा होगा।'' लोमड़ी ने कबूतर को शाबाशी देते हुए कहा– ''मैं उसी बरगद पर रहती हूँ जिसके नीचे गधा दोपहर को सोने जाता है। जब वह सो रहा होगा तब मैं खोह में घुसकर उसके सींग चुरा लूँगी।'' गिलहरी ने किटकिट करते हुए लोमड़ी से कहा। गिलहरी भी गधे से काफी परेशान थी। वह और उसके बच्चे गधे के डर बरगद की घनी छाया में इन दिनों खेल नहीं पा रहे थे।

अगले दिन गिलहरी ने गधे के सींग बरगद की खोह से चुराकर लोमड़ी के हवाले कर दिए। लोमड़ी गधे के सींगों को लेकर शेर और हाथी के पास पहुँची। वाह! अब आएगा ऊँट पहाड़ के नीचे। देखता हूँ कि अब बच्चू मेरे सामने कैसे अकड़ता है।'' शेर ने गधे के सींगों को देखते हुए कहा।

''आज उस गधे को नाकों चने नहीं चबा दिए तो मेरा नाम भी हाथी नहीं।'' हाथी ने अपनी सूंड को हवा में लहराते हुए कहा।

उधर गधे की नींद टूटी तो उसने अपने सींग खोह में ना पाकर उसके पसीने छूट गए। एक सींग ही तो थे जिसके कारण वह जंगल में अपनी धाक जमाए

हुए थे। अब बिना सींगों के उससे कौन डरेगा? गधा अपने सींगों को तलाशते हुए सोचता जा रहा था कि तभी उसे शेर और हाथी की आवाज–आवाज अपनी ओर आती सुनाई दी।

''बाप रे! आज तो गई भैंस पानी में। लगता है जंगल के जीवों ने मिलजुलकर मेरे सींग चुरा लिए हैं। और शेर–हाथी मुझ पर अपना गुस्सा उतारने ही इधर आ रहे हैं। इससे पहले कि वे दोनों मार–मार कर मेरा भरता बना दे, मुझे यहाँ से नौ–दो ग्यारह हो जाना चाहिए।'' यह सोचते हुए गधा एड़ी–चोटी का जोर लगाकर ऐसे भागा एक बार भी पलट कर उसने जंगल की ओर नहीं देखा।

भागते–भागते गधा जब बेदम हो गया तो धरती पर बैठकर आराम करने लगा। जंगल काफी पीछे छूट गया था। अब वह किसी किसान के खेत में था। किसान ने सामने जब गधे को अपने खेत में आराम करते पाया तो उसने सोचा कि हो ना हो, यह वही जानवर होगा जो उसकी फसल को रोज चौपट करके जाता है, यह सोचते ही किसान ने अपनी लाठी से गधे की जमकर पिटाई कर दी। बेचारा गधा हाथी और शेर के डर के मारे जंगल की ओर भी न भाग सका।

किसान ने देखा कि मार खाकर भी गधा जंगल की ओर नहीं भाग रहा है तो उसने उसके गले में रस्सी बांधी और उसे बोझा ढोने के लिए पालतू बना लिया। तभी से गधा आदमी का पालतू है। कभी–कभी जब उसके अपने घमंड का पछतावा होता है तो वह ढेंचू–ढेंचू करने लगता है। यह सोचते हुए कि काश, उसने जानवर की बात मान ली होती तो वह जंगल का राजा भी हो सकता था।

– बीकानेर (राजस्थान)

प्रसंग

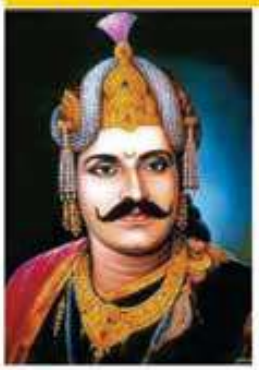

मैं मूर्ख कैसे?

एक बार महल में राजा भोज की विदुषी पत्नी अपनी एक सहेली से बात कर रही थी कि वे उन दोनों के बीच से निकलकर अन्दर चले गए। विदुषी पत्नी बोली– 'मूर्ख!'

भोज बहुत विद्वान थे वे समझ तो गए कि रानी ने उन्हें ही 'मूर्ख' कहा है, पर क्यों? यह उन्हें स्पष्ट न हुआ। संकोच यह कि पत्नी से उसकी सहेली के सामने यह पूछे भी कैसे? वे चुप रह गए।

अगले दिन राजसभा लगी। कालिदास जैसे ही राजदरबार में आए भोज ने कहा– ''आओ मूर्खराज!'' कालिदास महाविद्वान कवि थे राजा का यह व्यवहार सबको चौंकाने वाला था। कालिदास मुस्कुराते हुए बोले–

गच्छन्न खादामि हसन्न जल्पे,
गतं न शोचामि कृतं न मन्ये।
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन!
किं कारणं भोज भवामि मूर्ख:।।

श्लोक का अर्थ था– ''मैं चलते–चलते खाता नहीं (जैसा आजकल बुफे पार्टियों में होता है), हँसते–हँसते ऐसे बात नहीं करता कि आधा सुनाई पड़े आधा हँसी में खो जाए, जो नष्ट हो गया है उसका दु:ख नहीं करता क्योंकि दु:ख करने से भी वह लौट नहीं सकता और किये हुए कार्य को 'मैंने यह किया है' ऐसा नहीं मानता, घमण्ड नहीं करता तथा दो लोग बात कर रहे हों तो उनके बीच से नहीं निकलता ये पाँचों कारण नहीं है तो मैं मूर्ख कैसे हुआ? अर्थात् मूर्ख ऐसा करते हैं।''

राजा को अपनी भूल समझ आ चुकी थी उन्होंने कालिदास को आदर सहित पुरस्कृत किया और अपने अनुचित व्यवहार के लिए क्षमा माँगी।

पुस्तक परिचय

धरोहर

मूल्य २५०/-

प्रकाशन- साहित्यागार
धामानी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)

जानी मानी बाल साहित्यकार सुकीर्ति भटनागर का यह बाल उपन्यास बाल मनोविज्ञान की कूंची को कल्पना के रंगों से चित्रित करते हुए मनोरंजन के साथ-साथ मानवीय सद्‌गुणों का यथार्थ रूप उकेरता है। बच्चों को आरंभ से अंत तक बाँधे रखता यह एक सशक्त उपन्यास है।

मायावन और धन धना धन

मूल्य १२५/-

प्रकाशन- प्रकाशन विभाग
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-११०००३

बाल साहित्य जगत में समीर गांगुली अपनी शैली के अनूठे रचनाकार हैं। वे नए विषयों को बाल साहित्य में प्रस्तुत करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। प्रस्तुत बाल उपन्यास छोटे बच्चों को शेयर मार्केट की आधारभूत जानकारी को सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। यह बाल साहित्य में अनछुआ विषय है जो विशेष क्षेत्र की जानकारी बढ़ाता है।

मध्यप्रदेश फिलेटरी की नज़र में

मूल्य २१०/-

प्रकाशन- वंदना प्रकाशन
११ बंगला कॉलोनी, महू नाका,
लालबाग रोड, इन्दौर-१ (म. प्र.)

बचपन में डाकटिकिटों की जानकारी जुटाना टिकिट एकत्र करना अनेक बच्चों का शौक होता है जो बड़े हो जाने पर भी निरंतर रहता है। प्रसिद्ध लेखक उमेश कुमार नीमा ने इस पुस्तक में मध्यप्रदेश में डाक टिकिटों के इतिहास पर शोध पूर्ण, प्रामाणिक, सचित्र जानकारियाँ प्रस्तुत की है। जानकारी, रोचक एवं बोधक दोनों है।

डॉ. श्यामपलट पाण्डेय हिन्दी बालसाहित्य जगत के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। आप बच्चों के लिए उनके विजया बुक्स १/१०७५३, सुभाष पार्क, गली नं.३, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२ से प्रकाशित दो बाल कविता संग्रह प्रस्तुत हैं।

ढोल बजाता चूहा आया

मूल्य १५०/-

नाम से ही स्पष्ट है यह मनोरंजक बाल कविताओं का मनमोहक पिटारा है, ३४ बाल कविताओं का।

नई राह है हमें बनानी

मूल्य २९५/-

इस बाल कविता संग्रह में प्रेरणा से भरपूर गणित, विज्ञान आदि विषयों पर भी काव्यात्मक प्रस्तुति करती कविताएँ हैं। अनेक जानकारियों से भरपूर यह पुस्तक ज्ञान एवं मनोरंजन से भरी-पूरी है।

खाना

चित्रकथा-

मैनेजर sss
जी सर.
ये भी कोई खाना है? इसे तो कुत्ते भी नहीं खा सकते..
बैरा sss इधर आओ
जी.
ये सब उठाओ और साब के लिए ऐसा खाना लाओ जिसे कुत्ते भी खा सकें..

चमगादड़ है दोस्त

– मुग्धा पांडे

अरे! दादाजी आज तो सैर करते–करते शाम हो गई। ओह! वो देखो, दादाजी! वो चमगादड़। ''गोलू ने संकेत करते हुए कहा। तो दादाजी ने भी गरदन उठाकर देखा ''अरे, अरे... हाँ हाँ गोलू, इसे जाने दो। अच्छा दादाजी! अब शाम गहरी हो रही है, इसीलिए तो ये चमगादड़ उड़ने लगे हैं।'' ''दादाजी! पर इसके बारे में आपको कैसे पता। पता है गोलू हम लोग तो गांव में रहते थे न। तब रात को चमगादड़ दिखाई देते थे। ये हमारे खेतों को हानिकारक कीट से बचाते थे। ''अच्छा, और बताओ न दादाजी!'' गोलू, सुनना चाहता था।

दादाजी कहने लगे, ''गोलू यह चमगादड़। एक ऐसा स्तनधारी है जो उड़ सकता है। इसके पंख अन्य पक्षियों से भिन्न होते हैं, जो देखने में झिल्ली जैसे होते हैं। इसकी टाँग और बाहें त्वचा या झिल्ली के चारों ओर फ्रेम की तरह फैली होती हैं। इसकी अँगुलियाँ छाते की तीली की तरह होती हैं। जो झिल्ली को खोलती और बंद करती है। ये अँधेरे में बहुत ही आराम से उड़ते हैं। प्रकाश की तीव्रता से इन्हें देखने में कष्ट होता है। यह रात के अंधेरे में अपनी चमकीली आँखों एवं तेज नाक से अपना भोजन आसानी से ढूँढ़ लेते हैं।

इनके मुँह में दाँत पाए जाते हैं, जो इनके आहार को कुतरने में इनकी मदद करते हैं। चमगादड़ कई प्रकार के होते हैं– कुछ तो बहुत बड़े और कुछ अत्यंत छोटे होते हैं। इनके खाने की आदत बहुत ही भिन्न होती है। कुछ चमगादड़ फल खाते हैं और कुछ छोटे–छोटे कीड़े–मकौड़े। ये वृक्षों पर या गुफाओं अथवा पुरानी इमारतों में अपने बड़े झुंड के साथ उलटे लटके रहते हैं। एक ऐसा जीव है जो किसानों के करोड़ों रुपयों की बचत करता है।

उदाहरण के तौर पर लगभग सौ बड़े भूरे चमगादड़ गर्मी के मौसम में बहुत सारे ऐसे कीटों को खा जाते हैं जो फसल को नुकसान पहुँचाते हैं और इससे किसानों के प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये बचते हैं। कुछ देशों में जैसे चीन, ताइवान और जापान, बर्मा आदि में चमगादड़ को अच्छे भाग्य व शुभ संकेत का प्रतीक माना जाता है।

चमगादड़ों के मल का उपयोग बारूद बनाने के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर अमेरिका गृह युद्ध में एक बार ऐसा किया जा चुका है। चमगादड़ों में कुछ प्रजातियों के ऐसे चमगादड़ होते हैं जो केवल खून पीते हैं और इन्हें पिशाच चमगादड़ कहा जाता है। एक बड़ा चमगादड़ एक दिन में अपने वजन के बराबर खून पी सकता है।

आश्चर्य होगा चमगादड़ हमेशा उल्टा लटक कर सोते हैं। विश्व में अमेरिका ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ सर्वाधिक मात्रा में चमगादड़ पाए जाते हैं।

बड़े चमगादड़ों के पंखों की लंबाई लगभग सात से आठ फीट तक हो सकती है। वैज्ञानिकों के अनुसार विश्व में अब तक चमगादड़ों की कुछ बारह हजार प्रजातियाँ को खोजा जा चुका है जिनमें से

अधिकांश प्रजातियाँ अमेरिका में पाई जाती हैं।

ये चमगादड़ प्रकृति के लिए बेहद हितकारी होते हैं। उदाहरण के तौर पर चमगादड़ पेड़–पौधों के बीजों व फलों को खाकर उनके बीज जंगल में फैलाते चलते हैं जिस कारण जंगल घने हो जाते हैं और ऑक्सीजन का स्तर–अनुकूल रहता है।

चमगादड़ों की कुछ प्रजातियाँ लंबे समय तक जीवित रह सकती हैं उदारण के लिए भूरा चमगादड़ लगभग चालीस वर्षों तक जीवित रह सकता है। आपको जानकर हैरानी होगी विश्व में पाई जाने वाली कुल स्तनधारी प्रजातियों में लगभग बीस प्रतिशत चमगादड़ों की जन संख्या है। प्राचीन यूरोप में चमगादड़ का उपयोग घरेलू दवाइयाँ बनाने के लिए किया जाता था।

दुनिया में पाए जाने वाले सबसे छोटे चमगादड़ की प्रजाति का नाम बंबलबी है और इसका वजन मात्र दो सौ ग्राम होता है। क्या आप जानते हैं चमगादड़ अंडे न देकर सीधे बच्चों को जन्म देते हैं क्योंकि यह मनुष्य की तरह स्तनधारी जीव हैं।

विश्व में पाई जाने वाली चमगादड़ की प्रजातियों में अधिकांश चमगादड़ भूरे या काले रंग के होते हैं। वैज्ञानिकों के शोध के अनुसार पाया गया है कि चमगादड़ों की उत्पत्ति डायनासोरों के समय से रही है अर्थात यह जीव लगभग सात से दस करोड़ वर्ष पहले भी रहा होगा।''

''चलो दादाजी! आज इतनी मजेदार बातें सुनते हुए रास्ते का पता ही नहीं चला और घर भी आ गया और माँ हमको रसोईघर की खिड़की से देख रही है। ''आ जाओ बाबूजी और गोलू! आपके लिए गरमा–गर्म पकौड़े तैयार है।'' माँ रसोईघर से उनका स्वागत करती हुई बोली।

कविता

जग हँसाई

– राजेश अरोड़ा

सूट पहन कर टाई बांधी,
खूब संवारे बाल।
बिल्लू बंदर तैयार हुआ,
जाने को ससुराल।।

जा बैठा वह गाड़ी में,
लिए बिना ही टिकिट।
भालू राम टीटी आये तब,
हुई समस्या विकट।।

टिकिट नहीं दिखा पाने पर,
बिल्लू को लज्जा आई।
जुर्माना भी भरा जेब से,
करवा ली जगत हँसाई।।

– गजसिंहपुर
(राजस्थान)

नियमित अभ्यास

– नीना सिंह सोलंकी

इस बार बड़े दिन की छुट्टियों में सुबोध के चाचा–चाची और उनका बेटा नरेश उसके यहाँ आने वाले थे। वह बहुत खुश था।

''माँ कितना आनन्द आएगा नरेश को मैं अपने मित्रों से मिलवाऊँगा।'' उसने अपनी शतरंज भी निकाल ली थी।

''तुम अपने विद्यालय का गृहकार्य नरेश के आने से पहले ही कर लेना जिससे तुम मन भर कर खेल सको।''

''जी माँ! उसके आने पर तो खूब खेलेंगे।''

''चलो अब जल्दी से आओ में खाना लगा रही हूँ पहले भोजन कर लो।''

आज नरेश आने वाला था। वह तैयार होकर माँ–पिताजी के साथ स्टेशन उसे लेने गया। तभी उसे नरेश की आवाज सुनाई दी, ''सुबोध! मैं यहाँ हूँ।''

उसने पलट कर देखा चार कदम दूर ही नरेश खड़ा था। दोनों जल्दी से आगे बढ़कर, एक–दूसरे के गले लग गए।

''अरे, हम भी आए हैं सुबोध!'' चाचाजी ने कहा ता सब जोर से हँस पड़े।

''लाइए चाची! बैग मुझे दीजिए।'' सुबोध ने चाचा–चाची के पैर छू लिए।

दोनों एक–दूसरे के गले में हाथ डाले ही स्टेशन के बाहर आए।

घर पहुँच कर सुबोध ने नरेश को अपने कमरे में ही रुकने को कहा, तो नरेश भी खुश हो गया। गपशप व खाने–खिलाने के बाद दोनों सोने के लिए कमरे में आ गए। नरेश ने भी उसे सामान्य ज्ञान की किताब निकाल कर दी जो वह उसके लिए लाया था।

''अभी सो जाते हैं सुबह खेलेंगे।''

''ठीक है।'' सुबोध ने शतरंज रखते हुए कहा।

नरेश सुबह जल्दी उठ गया और अपने दैनिक कर्म करने के बाद अपनी किताब पढ़ने बैठ गया। जब सुबोध सोकर उठा तो उसे पढ़ता देख, उसे बहुत आश्चर्य हुआ।

''अरे! यहाँ तो तू मस्ती करने आया है ये क्या पढ़ाई लेकर बैठ गया।'' सुबोध ने आँखें मलते हुए कहा।

''मस्ती भी करेंगे, पर ये मेरा पढ़ने का समय है।''

''छुट्टियों में भी कोई पढ़ता है क्या?''

''मैं तो नियमित पढ़ता हूँ।''

''वैसे भी हमें शतरंज खेलना था न!''

''पहले अपना पाठ समाप्त कर लूँ फिर खेलेंगे।''

''चलो दोनों दूध पियो।'' माँ दूध कमरे में ही

ले आईं थीं।

''वाह नरेश! तुम पढ़ने भी बैठ गए। बड़ी अच्छी बात है।'' उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरा।

''देखो न माँ! इसे यहाँ आकर भी पढ़ने की पड़ी है।'' सुबोध ने मुँह बनाया।

''सुबोध! मैं तो कहता हूँ कि तुम भी जल्दी से अपनी किताब लाओ और पढ़ो।''

''हाँ बेटा! हम अपनी कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ को भी, यदि पहले से पढ़कर जाते हैं तो वह हमें जल्दी समझ आता है।'' माँ ने सुबोध को दूध का ग्लास देते हुए कहा।

''वैसे भी हमें अपना प्रत्येक कार्य समय पर ही करना चाहिए।''

शाम सुबोध ने अपने दोस्तों से नरेश को मिलवाया तो सब बहुत खुश हुए। सभी ने मिलकर खूब मस्ती की। तभी पड़ोस वाले गुप्ता काका घर आए तो,

सारे बच्चों ने उन्हें घेर लिया। काका परिसर में सभी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। वे बच्चों को अच्छी-अच्छी ज्ञान की बातें बड़े मनोरंजक ढंग से बताया करते थे इसलिए बच्चों को भी उनकी बातों में बड़ा मजा आता था। आज काका बहुत जल्दी में थे।

''बच्चो! कल अपने परिसर के उद्यान में मिलते हैं। सुबोध बेटा, नरेश को भी लेकर आना।'' दूसरे दिन सभी बच्चे उद्यान में एकत्रित हो गया।

काका पहले से ही सभी की प्रतीक्षा कर रहे थे। आते ही बोले, ''बच्चो! चलो जल्दी से पंक्तिबद्ध बैठ जाओ।''

''काका! क्या करवाने वाले हैं?'' नरेश ने धीरे से पूछा।

''काका कभी कोई खेल खिलाते हैं, कभी हम सबको कहानी सुनाते हैं।'' सुबोध ने उसे बताया।

''अच्छा! तो आज क्या करवाएँगे?'' नरेश को उत्सुकता थी।

''कई बार हम सबको पढ़ाते भी हैं और कभी-कभी तो उपहार भी देते हैं।'' पड़ोस में रहने वाले अनुज ने नरेश के पास आकर कहा।

''आज पता नहीं क्या कराएँगे?'' सुबोध ने विस्मय से काका की ओर देखते हुए कहा।

''बच्चो! मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगा। जो सही उत्तर देगा उसे पुरस्कार मिलेगा।'' काका ने साथ लाए थैले में हाथ डालते हुए कहा। अब तो बच्चों उत्सुकता बहुत बढ़ गई। साथ-साथ घबराहट भी क्योंकि पता नहीं काका क्या पूछेंगे? उत्तर पता होगा या नहीं?

''बच्चो! हमारे राष्ट्रीय पक्षी का नाम बताओ। जिसे आता हो हाथ उठाए।'' कई बच्चों ने एक साथ हाथ उठाए।

''अन्वेष! तुम बताओ।''

''हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर है।''

''बिलकुल सही बेटा!'' काका ने थैले में से

एक पेन्सिल निकाल कर अन्वेष को दी।

ऐसे ही काका ने कई प्रश्न पूछे। बच्चों ने सही-सही उत्तर दे दिए। सभी को पुरस्कार स्वरूप कुछ न कुछ मिला था।

''अच्छा, ये बताओ कि गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी का दर्जा कब मिला था?'' इस बार सब बच्चे चुप थे।

''किसी को भी नहीं पता क्या?''

नरेश जो अब तक चुप बैठा था, फुर्ती से खड़ा हो गया। खड़े होकर उसने हाथ उठाया तो काका हँसने लगे और बोले, ''बताओ बेटा!''

''गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी का दर्जा २००८ में दिया गया था।''

''बहुत बढ़िया बेटा!'' फिर तो आगे के सारे प्रश्न कठिन होते चले गए। सारे बच्चों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और खास बात यह थी कि नरेश सारे उत्तर जानता था।

काका ने उसके पास जाकर उसे गले लगा लिया। नरेश ने उनके पैर छूकर अभिवादन किया।

''जानते हो बच्चो! नरेश को इतना ज्ञान क्यों है?'' बच्चे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। ''काका ये अपनी कक्षा में भी हमेशा प्रथम आता है।'' सुबोध ने बताया।

''मुझे पता है बेटा! कल मैंने इससे बात की थी। ये सब नियमित अभ्यास के कारण ही संभव है। प्रतिदिन पढ़ने-लिखने से हमारे ज्ञान में बहुत अधिक वृद्धि होती है।'' ''हाँ काका! ये कल सुबह उठते ही पढ़ने बैठ गया था।'' सुबोध ने आश्चर्य से कहा।

''हाँ बेटा! इससे हमें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी ज्ञान प्राप्त होता है।'' ''आज से आप सब संकल्प लो कि नियमित अभ्यास की आदत डालोगे।''

- भोपाल (म. प्र.)

कविता

डॉक्टर चूहा

- नीता अवस्थी

चिड़िया रानी तेज चाल से,
अस्पताल में आई।
डॉक्टर चूहे को फिर उसने,
अपनी व्यथा सुनाई।।

छोटे चूजे को दो दिन से,
दर्द पेट में भारी।
मेथी हींग और अजवाइन,
खिला-खिलाकर हारी।।

डॉक्टर चूहे राजा ने फिर,
यूँ फटकार लगाई।
बंद करो बाहर का खाना,
दूँगा तभी दवाई।।

चिड़िया बोली- ध्यान रखूँगी,
अब मैं डॉक्टर राजा!
स्वस्थ अगर रहना है हरदम,
करना भोजन ताजा।।

- कानपुर (उ. प्र.)

सोना समझ गयी

– प्रिया देवांगन 'प्रियू'

''मैं बहुत थक गई हूँ। अब एक कदम भी नहीं चला जाता है मुझसे। सुबह से शाम तक बस केवल काम ही काम। सुनिए जी! आज मैं घर पर ही रहूँगी। आप जाइये काम पर।'' नन्हीं चींटी सोना ने अपने पति डंबू से कहा।

डंबू ने सोना को चिढ़ाते हुए कहा– ''ओह! तो आज मेरी सोना थक गई है। आराम करना चाहती है। अच्छा....।''

डंबू की बात से सोना तमतमा गई। कहने लगी– ''मैं आपसे अधिक वजनदार सामान उठाती हूँ। लेकिन आज थोड़ी थकान अनुभव कर रही हूँ।''

डंबू ने कहा– ''ठीक है, आज तुम आराम कर लो। कल साथ में चलेंगे।'' सोना ने मुस्कुराते हुए कहा– ''तो आप जाइए।'' डंबू काम पर चला गया।

दिन भर डंबू काम करता रहा। शाम को घर वापस आया। खाने का कुछ सामान ले आया था। घर के अंदर रखा। सोना से कहा– ''सोना! तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?''

सोना सेब के टुकड़े को चबाते हुए मजे से बोली– ''मैं बिल्कुल अच्छी हूँ। भली चंगी हूँ।''

सोना घर में रहने का बहुत आनंद ले रही थी। डंबू को बात समझ आ गई। उस समय उसने कुछ नहीं कहा। अगले दिन सुबह डंबू ने सोना से भोजन की व्यवस्था के लिए अपने साथ चलने की बात कही। सोना फिर बहाना मारने लगी। लेकिन डंबू अच्छी तरह समझ गया। सोना को समझाते हुए बोला– ''देखो सोना! मुझे पता है कि तुम काम पर नहीं जाना चाहती। क्यों कर रही हो ऐसा?''

डंबू का मुँह ताकती हुई सोना उसकी बातें सुन रही थी– ''हम चींटीं हैं। हम घर पर बैठकर आराम नहीं कर सकते। बहाना तो इंसान बनाते हैं। हम चींटियाँ नहीं। जब तक मेहनत नहीं करेंगे, भला हमें भोजन कैसे और कहाँ से मिलेगा?'' तभी बीच में ही सोना का कहना हुआ– ''हाँ! तुम सही कह रहे हो। जीवन में मेहनत आवश्यक है।''

डंबू बोला– ''हाँ बिलकुल! अब सर्दी का मौसम आ रहा है। भोजन ढूँढ़ना कठिन होगा। इस बात को समझो। चीटियाँ कभी हार नहीं मानतीं। जब कोई इंसान कमजोर पड़ने लगता है तो हमसे ही परिश्रम करने की सीख लेता है कि एक छोटा–सा जीव हार नहीं मानता है तो हम क्यों हार माने। इंसानों को हमारी मेहनत, एकता और साहस ही मजबूत बनाता है। धरती में सबसे अधिक परिश्रमी प्राणी के रूप में हमारी गिनती होती है। तुम ऐसे कमजोर नहीं पड़ सकती।'' सोना को डंबू की बातें समझ में आ गई। उसे अपनी गलती का अनुभव हुआ। फिर डंबू और सोना दोनों भोजन की खोज में निकल पड़े।

– गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

समस्या समीकरण

– शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

फिरोजाबाद जनपद में राजा चन्द्रसेन पराक्रमी राजा का शासन था। उसकी कोई संतान नहीं थी। ढलती आयु के कारण जनपद के भावी उत्तराधिकारी को लेकर चन्द्रसेन अत्यन्त चिंतित रहते थे।

जनपद के अनेक वैद्यों को दिखाने के बाद भी राजा संतान सुख से वंचित ही रहा। उसने जनपद के ही किसी योग्य नवयुवक को जनपद की बागडोर सौंप देने का निश्चय किया।

भावी उत्तराधिकारी के चयन हेतु उसने योग्यता परीक्षण का आयोजन किया। जिसके लिए एक शानदार महल का निर्माण करवाया गया। महल के दरवाजे पर गणित का एक समीकरण अंकित कर पूरे जनपद में घोषणा कर दी गई कि जनपद के सभी नवयुवक महल का दरवाजा खोलने आमंत्रित हैं।

दरवाजे पर अंकित समीकरण हल कर दरवाजा खोले। जो दरवाजा खोलने में सफल होगा, उसे महल उपहारस्वरूप प्रदान किया जाएगा। और साथ ही जनपद का उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया जाएगा।

घोषणा के दिन से ही वहाँ नवयुवकों का तांता लग गया। सुबह से लेकर शाम तक नवयुवक वहाँ आते और दरवाजे पर अंकित गणित के समीकरण को हल करने का प्रयास करते।

किन्तु आश्चर्य की बात थी कि कोई भी उसे हल नहीं कर पा रहा था।

कई उसे लिखकर या याद करके जाते और घर पर उसका हल निकालने का हरसंभव प्रयास करते किन्तु असफल रहते।

कई दिन बीत गए। जनपद के बड़े से बड़े गणितज्ञ भी उस समीकरण का हल निकाल पाने में असमर्थ रहे।

तब चन्द्रसेन ने दूसरे जनपद के गणितज्ञों को आमंत्रित किया। दूसरे जनपद के गणितज्ञ आए और गणित का वह समीकरण हल करने लगे। जैसे–जैसे दिन ढलता गया। एक–एक करके गणितज्ञ वहाँ से जाते गए।

अंत में मात्र तीन लोग शेष बचे। उसमें से दो दूसरे जनपद के गणितज्ञ थे, तीसरा दौलतपुर गांव का एक साधारण सा युवक अभ्युदय था।

दोनों गणितज्ञ जहाँ गणित का समीकरण हल करने में लगे थे। अभ्युदय एक कोने में खड़े होकर उन्हें देख रहा था।

राजा चन्द्रसेन ने जब अभ्युदय को यूँ ही खड़ा देखा तो पास बुलाकर पूछा– ''तुम दरवाजे पर अंकित समीकरण हल क्यों नहीं कर रहे हो?''

अभ्युदय बोला– ''महाराज! मैं तो बस यूँ ही इन प्रसिद्ध गणितज्ञों को देखने आया हूँ। ये अपने जनपदों के इतने बड़े गणितज्ञ हैं। इन्हें समीकरण हल करने दीजिए यदि इन्होंने हल निकाल लिया तो जनपद के उत्तराधिकारी बन जाएँगे। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या होगी? यदि ये समीकरण हल नहीं कर पाए, तब मैं प्रयत्न करके देखूँगा।''

इतना कहकर अभ्युदय एक कोने में बैठकर गणितज्ञों को देखने लगा। किन्तु दोनों गणितज्ञ समीकरण हल नहीं कर पाए।

अभ्युदय के मस्तिष्क में पूरे दिन मात्र एक ही प्रश्न घूम रहा था कि आखिर इस समीकरण में ऐसा भी क्या है? कैसे यह हल होगा? कैसे महल का यह दरवाजा खुलेगा?

पूरा प्रयास करने के बाद भी जब गणितज्ञ समीकरण हल नहीं कर पाए और उन्होंने हार मान ली।

तब एक कोने में बैठा अभ्युदय उठा और दरवाजे के पास गया। दरवाजे को जाकर धीरे से धक्का दिया। जैसे ही उसने दरवाजे को धक्का दिया। दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुलते ही लोग अभ्युदय से पूछने लगे– ''तुमने ऐसा क्या किया कि महल का दरवाजा खुल गया?''

अभ्युदय बोला– ''जब मैं बैठ कर सबको गणित का समीकरण हल करते देख रहा था तो मेरे मस्तिष्क में एक विचार आया कि हो सकता है कि दरवाजा खोलने का कोई समीकरण ही न हो इसलिए मैं गया और सबसे पहले जाकर दरवाजे को धक्का दे दिया। दरवाजा खुल गया। दरवाजा खोलने का कोई समीकरण था ही नहीं।''

अभ्युदय का उत्तर वहाँ उपस्थित राजा चन्द्रसेन ने भी सुना और बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अभ्युदय को वह महल भी दे दिया और जनपद का भावी उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया।

गणितज्ञों की समझ में आ गया कि जीवन में हम कई बार ऐसी परिस्थिति में फंस जाते हैं कि जब हमें लगा है कि हमारे सामने पहाड़ जैसी समस्या है। जबकि वास्तव में कोई समस्या होती ही नहीं या होती भी है तो बहुत छोटी–सी।

किन्तु हम उसे बहुत बड़ा बनाकर उसमें उलझे रहते हैं। बाद में उस समस्या का समाधान अपने आप ही निकल जाता है। या फिर थोड़े से प्रयास के बाद।

तब हमें अनुभव होता है कि इतनी सी समस्या के लिए हमने कितना समय बर्बाद कर दिया।

समस्या सामने आने पर विचलित न हों, शांति से सोचें और फिर समाधान करने का प्रयास करें।

– फिरोजाबाद (उ. प्र.)

फंस गए

चित्रकथा: देवांशु वत्स

रवि लायट्र का विस्मयकारी भारत

ओडिशा के पुरी में स्थित भगवान जगन्नाथ का मन्दिर अपने अन्दर अनेक रहस्य समेटे हुए है जिनका विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं है। 4 लाख वर्ग फ़ीट में फैले, 214 फ़ीट ऊंचे मन्दिर के शिखर की कभी कोई छाया पृथ्वी पर नज़र नहीं आती। मन्दिर के ऊपर से हवाई जहाज़ तो छोड़िए, कोई पक्षी तक उड़ता नहीं गुज़रता और शीर्ष पर लगा ध्वज हमेशा वायु के बहाव की विपरीत दिशा में ही लहराता नज़र आता है।

शिमला से करीब 430 किमी. दूर समुद्र तल से 4270 मी. की ऊंचाई पर, हिमांचल की स्पीति घाटी में बसे किब्बर गांव को दुनिया के सबसे ऊंचे गांव का दर्जा मिला हुआ है। इस गांव में बहुत से मठ हैं, ऊंचाई के मामले में स्वाभाविक रूप से जिनकी विश्वभर में कहीं कोई समानता नहीं है और यहां की निराली प्राकृतिक छटा का तो क्या कहना।

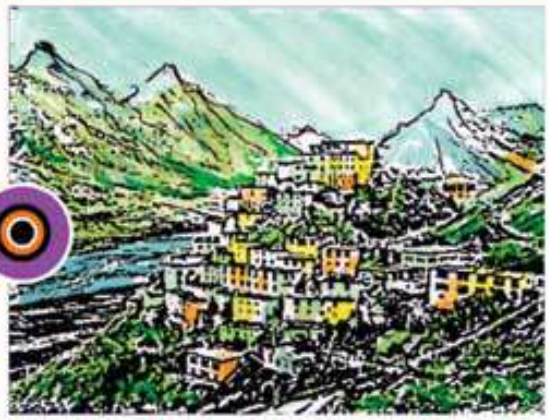

मार्शल आर्ट में सबसे महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है कुंग्फु और इसे सिखाने का प्राचीनतम विद्यालय चीन में स्थित सओलिन मन्दिर को माना जाता है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि इस विद्यालय की आधारशिला रखने वाले और चीन को इस कला का ज्ञान देने वाले एक भारतीय ही थे जिनका नाम था बोधिधर्मन।

550 ई.पू. दक्षिण भारत के पल्लववंश के राजकुमार बोधिधर्मन (जिन्हें धरुआ नाम से भी पुकारा गया) भिक्षु बन गए और इस कला में उन्होंने ऐसी महारत हासिल की कि दुनियाभर में उन्हें इस कला को विस्तार देने के लिए आज भी याद किया जाता है।

© gyanhim@gmail.com/ 0 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

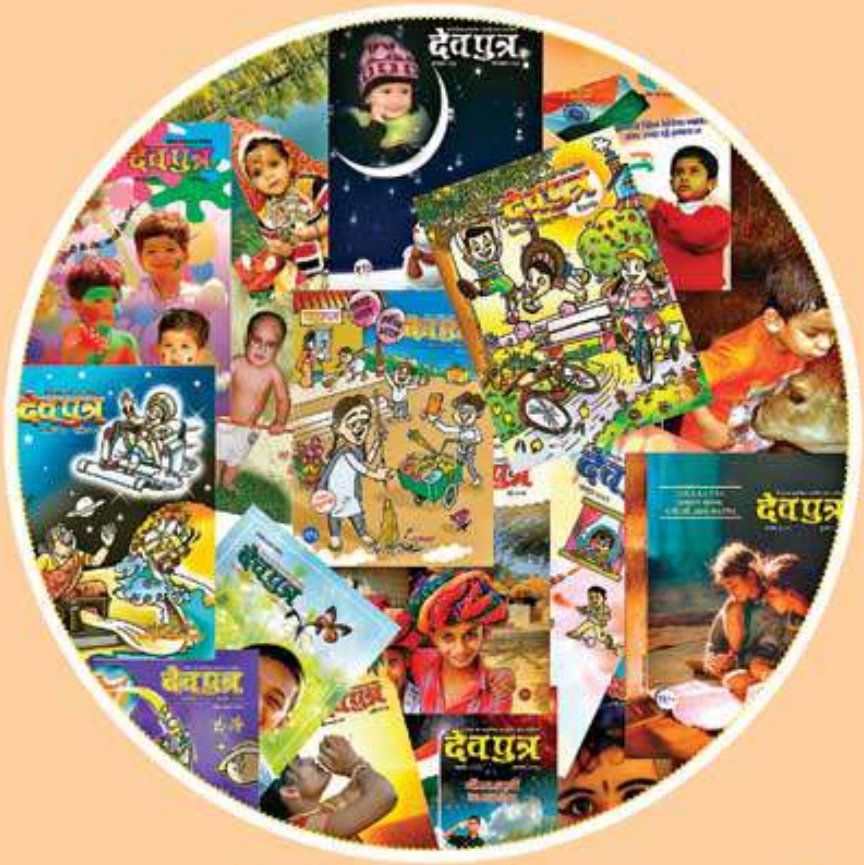

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना